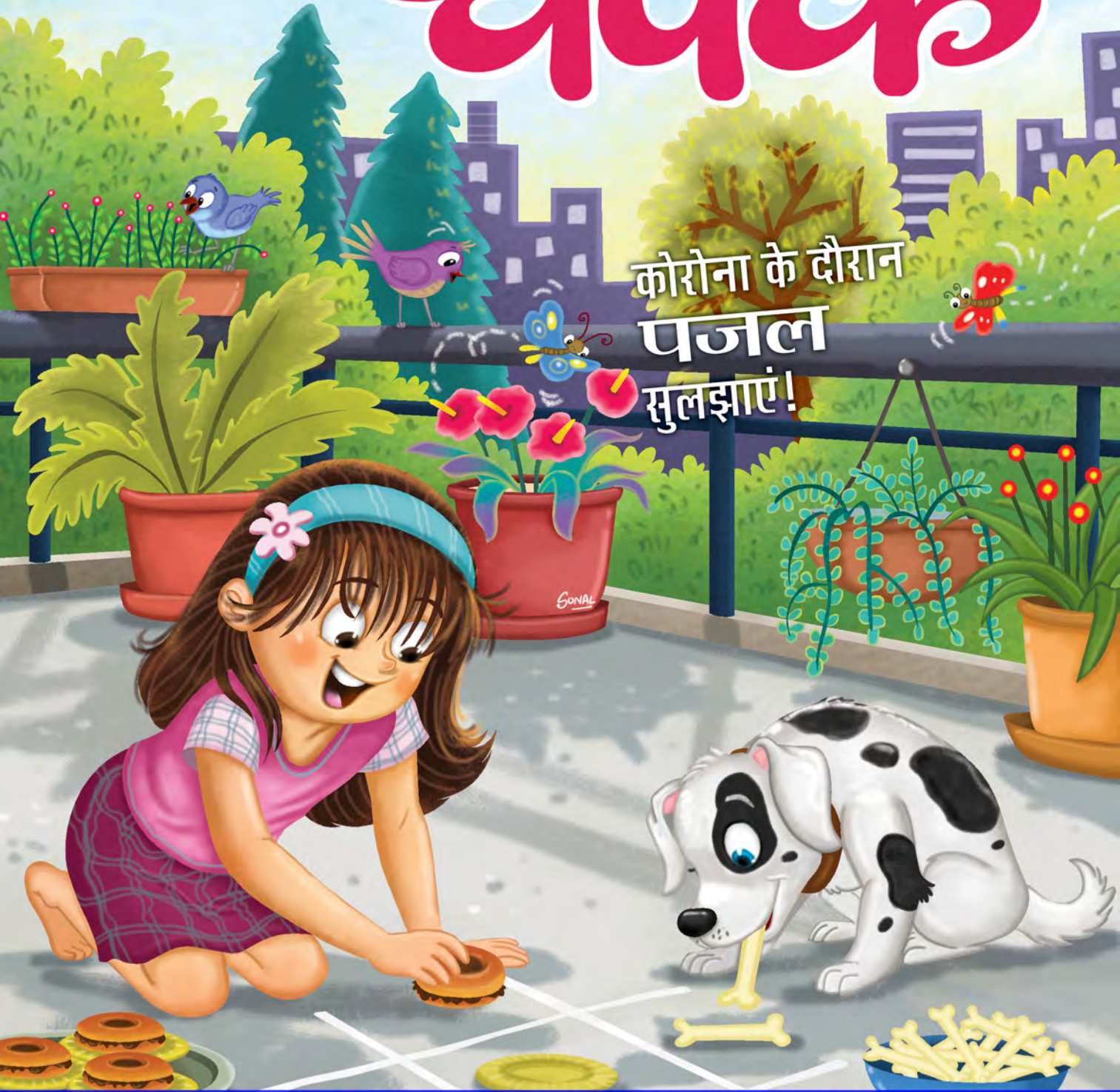


जून (प्रथम) 2020 | ₹ 30.00

चंपक

कोरोना के दौरान
पजल
सुलझाएं!



सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

कोविड-19
से सुरक्षित रहें,
जब भी बाहर निकलें
मास्क लगाकर निकलें,
सावधानी में ही
बचाव है।



हाथ साफ तो आप संक्रमण से सुरक्षित

COVISAFE

Antiseptic Hand Sanitiser Gel

- फार्मा ग्रेड सैनिटाइजर
- लुभावनी खुशबू
- हाथों की नमी बनाए रखे
- चिपचिपाहट रहित
- शीशे की तरह पारदर्शी

हेमोवॉल*

शहद सा गाढ़ा... संतरे सा स्वादिष्ट



आयरन एवं
फोलिक एसिड की कमी
दूर कर खून बढ़ाए

स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

रखे स्टमक फिट...
पेट फिट...आप फिट

अपच
गैस
ऐसिडिटी
से छुटकारा



फायदा पहली खुराक से ही

2 चम्मच/2 टैबलेट दिन में 3 बार खाने के बाद
आधा कप पानी के साथ 4 हफ्तों तक

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन : 8447977889 / 999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 84479 77999



चंपक

अंक : 1190



संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002



सुनो कहानी

पर्यावरण दिवस	4
वजन निकालो	16
बच गया नौटी	26
बातूनी चाली	32
गुप्त संदेश	44

मुख्यपृष्ठ

लौकडाउन ने आप को दुखी कर दिया है. परंतु आप घबराएं नहीं, हम आप के लिए सही समाधान ले कर आए हैं. हमारा पजल स्पैशल इशू मजेदार और चैलेंजिंग ऐक्टिविटीज के साथ आप के दिमाग की घंटी बजा देगा.



संपादक व प्रकाशक • परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, इंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, इंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.
चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, इंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. बी.पी.सी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के), वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

मन बहलाओ

14 पजल सिर्फ
आप के लिए

सुंदर रंग भरो	8
विश्व पर्यावरण दिवस	9
चित्र पूरा करें	10
मैथ फन	11
देखो हंस न देना	12
बिंदु मिलाओ	14
बीच पर एक दिन	15
बताओ तो जानें	20
स्मार्ट	30
सुलझाएं	31
स्टिक्स मिलाएं	35
याददाशत बढ़ाएं	36
बर्थडे पार्टी	37
सोचें और लिखें	38
अंतर बताओ	39

चित्र कथाएं

डमरू और सैनिटाइजर	13
चीकू	24
दादाजी और विश्व साइकिल दिवस	40

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	21
बच्चों ने किया लौकडाउन ऐंजौय	22
नन्ही कलम से	42

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, इंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
टोल फ्री नं. 18001038880 (सोम. से शनि सुबह 10 बजे से शाम के 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सएप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, बडाला उद्योग भवन, नेगाव क्रॉस रोड, बडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

● रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
● निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
● संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress.biz
● ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं:
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/user/ChampakSciQ



पर्यावरण दिवस



कहानी • ललित मोहन

बैडी लोमड़ चंपकवन के पेड़ों काटने करने की योजना बना रहा था. वह चंपकवन के जानवरों को पसंद नहीं करता था और हमेशा उन्हें नुकसान पहुंचाने की नई तरकीब सोचता रहता था. इस के लिए उस ने कुछ लोगों से सांठगांठ कर ली थी.

“हमें चंपकवन के पेड़ों को काटना होगा. यदि पेड़ नहीं होंगे तो जंगल खुद ही उजड़ जाएगा. वहां के जानवर परेशान हो जाएंगे और वे भूख से मरने लगेंगे. मैं यही चाहता हूं,” बैडी लोमड़ ने धूर्त मुसकान के साथ तस्कर से कहा.

“हां, हम पेड़ काट कर, उन्हें बेच कर मालामाल हो जाएंगे,” तस्कर ने अपनी कुल्हाड़ी उठाते हुए कहा.

“हमें चालाकी और योजनाबद्ध तरीके से यह सब करना होगा. किसी को भी कानोंकान खबर नहीं होनी चाहिए,” बैडी बोला.

“हां, किसी को भी पता नहीं चलना चाहिए. नहीं तो हमारे लिए पेड़ों को काटना मुश्किल हो जाएगा,” तस्कर बोला.

“मैं कल ही चंपकवन जा कर वहां की हालत देखना हूं. जैसे ही सबकुछ हमारे अनुकूल होगा, हम पेड़ काटना शुरू कर देंगे,” बैडी बोला.

“हां, यह ठीक रहेगा. जैसे ही स्थिति अनुकूल हो तुम हमें बता देना. मैं अपने साथियों के साथ





कुल्हाड़ी और आरी ले कर आ जाऊंगा,” तस्कर ने बैडी से कहा.

अगले दिन बैडी चंपकवन पहुंच गया. पूरा जंगल सजा हुआ था. पेड़ों पर रंगीन रिबन बंधे हुए थे. हर टहनी पर काफी लाइटें लटक रही थीं. सभी जानवरों ने अपने घरों को भी सजाया हुआ था. बैडी समझ नहीं पा रहा था कि आखिर बात क्या है, जो जंगल को इस तरह सजाया गया है.

उसी समय बैडी की नजर ब्लैकी भालू पर पड़ी, जो पेड़ पर जंपी बंदर को बैलून दे रहा था.

उस ने ब्लैकी से पूछा, “ब्लैकी, क्या बात है? आज जंगल को खूब सजाया जा रहा है. किसी की शादी है क्या?”

“तुम्हें नहीं पता. चंपकवन को क्यों सजाया जा रहा

है,” ब्लैकी ने बैडी की ओर देखते हुए पूछा.

“नहीं, तभी तो तुम से पूछ रहा हूं,” बैडी आंखें मटकाते हुए बोला.

“5 जून को पर्यावरण दिवस आने वाला है. ये सब हम उसी की तैयारी में कर रहे हैं. उस दिन चंपकवन में बड़ा उत्सव मनाया जाएगा,” ब्लैकी ने जवाब दिया.

‘ओह, तो यहां पर्यावरण दिवस की तैयारी चल रही है,’ बैडी मन ही मन बुदबुदाया.

“तुम ने कुछ कहा,” ब्लैकी ने पूछा.

“नहीं, नहीं,” कहते हुए बैडी वहां से चला गया.

चंपकवन के वीर हक्कू क्रौसिंग पर बहुत सारे जानवर इकट्ठा थे, जो यहां का मुख्य क्रौसिंग है.

सभी आपस में बातें कर रहे थे. शायद वे कोई योजना बना रहे थे. बैडी सभी को एकसाथ देख कर थोड़ा घबरा गया. वह वहीं एक किनारे बैठ कर उन की बातें सुनने लगा.

“इस बार हमें शेरु शेर को ही मुख्य अतिथि बनाना चाहिए,” डोला हिरन बोला.

“लेकिन शेरु तो इसी जंगल का है. भला कोई अपने ही जंगल में कैसे मुख्य अतिथि बन सकता है. कोई और देखना पड़ेगा,” चीकू खरगोश बोला.

“हां, तुम ठीक कहते हो चीकू. अगर कोई सुंदरवन से मिल जाए तो बेहतर रहेगा. उसे हमारे जंगल का पर्यावरण उत्सव देखने का अवसर भी मिल जाएगा. साथ ही वह अपने जंगल में जा कर हमारे जंगल की तारीफ भी करेगा,” ग्रेटा जिराफ बोला.

“तो ऐसा कौन हो सकता है,” चीकू ने अपना सिर खुजाते हुए कहा.

“बैडी लोमड़ कैसा रहेगा,” डोला बोला.

“बैडी तो हमेशा ही चंपकवन का बुरा करने की सोचता है. उसे भला हम मुख्य अतिथि क्यों बनाएं,” चीकू ने कहा.

“शायद डोला ठीक कह रहा है. बैडी को मुख्य अतिथि बनाया जा सकता है. वह भले ही चंपकवन का अहित सोचता हो. शायद मुख्य अतिथि का न्योता देने के बाद उस में कुछ सुधार आ जाए,” ग्रेटा ने कहा.

ग्रेटा की बात पर सभी सहमत हो गए. डोला की नजर अचानक बैडी पर पड़ी. उस ने कहा. “वह देखो, बैडी तो यहीं आया हुआ है. चलो, सभी मिल कर उसे पर्यावरण उत्सव का आमंत्रण देते हैं.”

सभी जानवर बैडी के पास पहुंचे. उन्होंने उसे पर्यावरण उत्सव में आने का न्योता दिया. सभी ने बैडी से कहा कि तुम्हें मुख्य अतिथि बनाया जाएगा. बैडी थोड़ा घबराया हुआ था. उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे.

“ठीक है, मैं जरूर आऊंगा,” बैडी ने कहा.





‘में तो चंपकवन को समाप्त करने की योजना बना रहा हूं और ये लोग मुझे ही मुख्य अतिथि बनाने की सोच रहे हैं,’ बैडी यह सोचता हुआ वहां से चला गया।

कुछ दिन बाद पर्यावरण दिवस के दिन बैडी चंपकवन आया। वहां उस का खूब स्वागत किया गया। उस को फूल माला पहनाई गई और एक बड़ी सी कुर्सी पर बैठाया गया।

जंगल के बच्चे कार्यक्रम दिखा रहे थे। उन के कार्यक्रमों में यही संदेश था कि हमें पेड़ों को काटने से बचना है। जंगल में अधिक से अधिक पेड़ लगाने हैं। जल इकट्ठा करना है। प्रदूषण नहीं फैलाना है। अगर हमारे वनों में पेड़ नहीं रहेंगे तो बड़ी प्राकृतिक आपदाएं आ सकती हैं।

बैडी इस से बहुत प्रभावित हुआ। सोचने लगा कि वह कितना बुरा काम करने जा रहा था। पेड़ों को काटना

कितनी बड़ी मूर्खता है। उस ने मन बना लिया था कि वह चंपकवन के पेड़ों को अब कभी नुकसान नहीं पहुंचाएगा। वह तस्करों को भी पेड़ काटने से मना करेगा।

पर्यावरण उत्सव का समापन होने वाला था। सभी जानवरों ने मुख्य अतिथि बैडी से कुछ कहने को कहा।

बैडी ने सभी को संबोधित करते हुए कहा, “आज मुझे यहां आ कर बहुत अच्छा लगा। मैं भी संकल्प लेता हूं कि आज से पेड़ों को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाऊंगा। मैं आप सभी को चंपकवन में 100 पेड़ लगाने का वचन देता हूं। मैं अपनी ओर से चंपकवन में 100 पौधे लगाऊंगा और उन की देखरेख भी करूंगा।”

यह सुनते ही सभी जानवर बहुत खुश हुए। उन्होंने बैडी को कंधे पर उठा लिया। बैडी अब पूरी तरह बदल चुका था।

सुंदर रंग भरो



विश्व पर्यावरण दिवस

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है चित्र को पहचानें और सही विकल्प को ✓ करें.

A

ग्लोबल वार्मिंग

आग



गरमी

पृथ्वी

B

अंगीठी

पत्तियां



कंपोस्टिंग

पत्थर

C

घास

सूरज



मिट्टी

फसल

D

शिप

तेल बहना



समुद्र

तेल

E

सोलर ऐनर्जी

सूर्य



झरना

नदी

F

ब्लैड्स

पर्वत



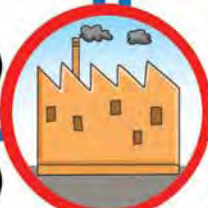
पंखा

पवनचक्की

G

फैक्टरी

मिट्टी



धुआं

घर

H

हरियाली

जड़



वनकटाई

नदी

I

तलाश करना

शिकार करना



किताब

लैपटॉप

J

चार्जर

बोतल



नगर

कूड़ा

K

धागा

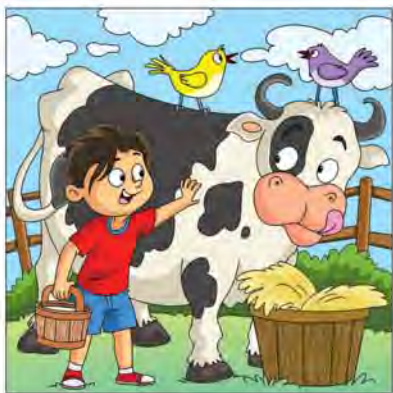
घर



बाढ़

पानी

उत्तर: अंतिम पृष्ठ पर देखें.



इस चित्र में कुछ
हिस्से खाली रह गए
हैं. चित्र को देखें, उन्हें
पूरा करें और फिर
इन में रंग भरें.

चित्र पूरा करें



मैथ फन

प्रश्नों को पढ़ें और उत्तर दें :



देवांग को अपनी कक्षा
में ऊपर से 16वीं और
नीचे से 12वीं रैंक
हासिल हुई. तो कक्षा में
कुल कितने छात्र हैं?

- A. 29, B. 28,
C. 27, D. 20.





मम्मी (पिंटू से) : ऐसी क्या बात है जो तुम्हें सोचने पर विवश करती है कि तुम्हारी आर्ट की टीचर ने कभी घर नहीं देखा? **पिंटू :** क्योंकि आज मैं ने एक घर बनाया तो टीचर ने मुझ से पूछा कि यह क्या है?

तनिशा डिसूजा, 10 वर्ष
मुंबई

मोहन (सोहन से) : एक आदमी के पास 2 मछलियां थीं. उस ने पहली का नाम वन रखा और दूसरी का दू. ऐसा क्यों? **सोहन :** क्योंकि अगर वन खो जाए तो उस के पास अभी भी दू थी.

सुजाना लाल, 10 वर्ष
कानपुर

आमिर (शाहिद से) : कौन तेज है, हौट या कोल्ड?

शाहिद : कोल्ड.

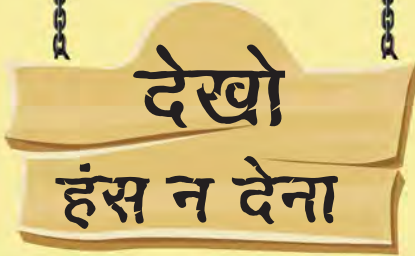
आमिर : गलत, हौट तेज होता है क्योंकि कोल्ड को तुम पकड़ सकते हो.

अदिति कारवड़े, 8 वर्ष
नागपुर

सीटू (बंटी से) : किस तरह के ट्री को तुम अपने हाथ में ले जा सकते हो?

बंटी : पामट्री.

समेय पसद, 9 वर्ष
मुंबई



हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

किट्टू (बिट्टू से) : ग्लोबोर्म दुखी क्यों था?

बिट्टू : क्योंकि उस के बच्चे ज्यादा चमकदार नहीं थे.

साचि जिंदल, 6 वर्ष, गुजरात

मम्मी (बेटे से) : कुत्ते कैसे भाग गए? मैं ने तुम से कहा था कि

सारे निकास द्वार बंद कर देना.

बेटा : हां, मैं ने सारे निकास द्वार बंद कर दिए थे. लेकिन ऐसा लगता है कि वे प्रवेश वाले मार्ग से भाग गए.

सिद्दीकी अंशद फैज, 11 वर्ष
नई दिल्ली

कोमल (किरण से) : वह कौन सी रानी है जिस का मुकुट सब से बड़ा है?

किरण : वह रानी जिस का सिर सब से बड़ा है.

अरिंजय भट्टाचार्य, 8 वर्ष
गोआ

राहुल (राज से) : अगर कैलेंडर पर साल 2020 को तुम ने छुआ तो तुम्हें जोर का झटका लगेगा, ऐसा क्यों, क्या तुम जानते हो?

राज : नहीं, क्यों?

राहुल : क्योंकि 2020 करेंट ईयर है.

फलक शेख, 7 वर्ष, मुंबई

टीना (मीना से) : वह आदमी बहुत आलसी है. वह यहां पर सुबह से ही बैठा है.

मीना : तुम्हें कैसे पता?

टीना : मैं यहां पर सुबह से बैठी हूं और उसे देख रही हूं.

सैयद समर, 9 वर्ष, भोपाल

एक आदमी बहुत जल्दी में था क्योंकि उसे ट्रेन पकड़नी थी. एक खेत के पास उस ने एक किसान से पूछा, “मुझे माफ करें सर, अगर मैं आप के खेत के बीच से हो कर निकल जाऊं तो बुरा तो नहीं मानेंगे. आप देख सकते हैं, मुझे 4:23 की ट्रेन पकड़नी है.” किसान ने एक पल के लिए सोचा और बोला, “जरूर, तुरंत चले जाओ. फसलों पर पैर मत रखना. तुम्हें समय पर पहुंचना है और अगर मेरे सांड ने तुम्हें देख लिया तो तुम इस से पहले वाली ट्रेन पकड़ सकते हो.”

पारस जैन, 9 वर्ष, नई दिल्ली

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031

ईमेल : writetochampak@delhipress.in

और SMS: 9619587613

ऑनलाइन विजिट करें :

www.facebook.com/ChampakMagazine

<https://www.youtube.com/ChampakSciQ>



डमरू और सैनेटाइजर

कहानी • शिवेश श्रीवास्तव

फौकसी लोमड़ी के सैनेटाइजर की दुकान पर डमरू काम कर रहा था.

कोरोना वायरस की वजह से सैनेटाइजर की मांग काफी बढ़ गई है.

लेकिन सैनेटाइजर का इस्तेमाल किस के लिए होता है?

यह हमारे हाथों को साफ रखता है और संक्रमित होने के खतरे को कम करता है.

अच्छा, तब तो सैनेटाइजर बहुत उपयोगी है.

हां, अब तुम अपना काम अच्छी तरह करो. 50 रुपए वाले सैनेटाइजर को 100 रुपए में बेचो.

हां, तुम इस मुनाफे को अपने लिए रख सकते हो. मैं और ज्यादा स्टॉक लाने जा रही हूं.

50 रुपए वाले को 100 रुपए में?

आप निश्चित रहें, मालकिन. इस मास्क को पहन लें और फिक्र न करें.

मैं जब लौट कर आऊंगी तो देखूंगी कि तुम ने कितने सैनेटाइजर बेच लिए.

मैं ने नंदू हाथी, पिकी बकरी और गोलू बंदर को सैनेटाइजर ले जाते हुए देखा. तुम ने अवश्य ही बहुत सारे बेचे. मुझे रुपए दो.

क्या, तुम ने सारे सैनेटाइजर मुफ्त में बांट दिए?

न सिर्फ सैनेटाइजर बल्कि उन्हें मैं ने मास्क भी दे दिए.

कैसे रुपए मालकिन? मैं ने तो उन्हें सैनेटाइजर मुफ्त में दे दिए.

मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं ने तुम पर इतना भरोसा क्यों किया था.

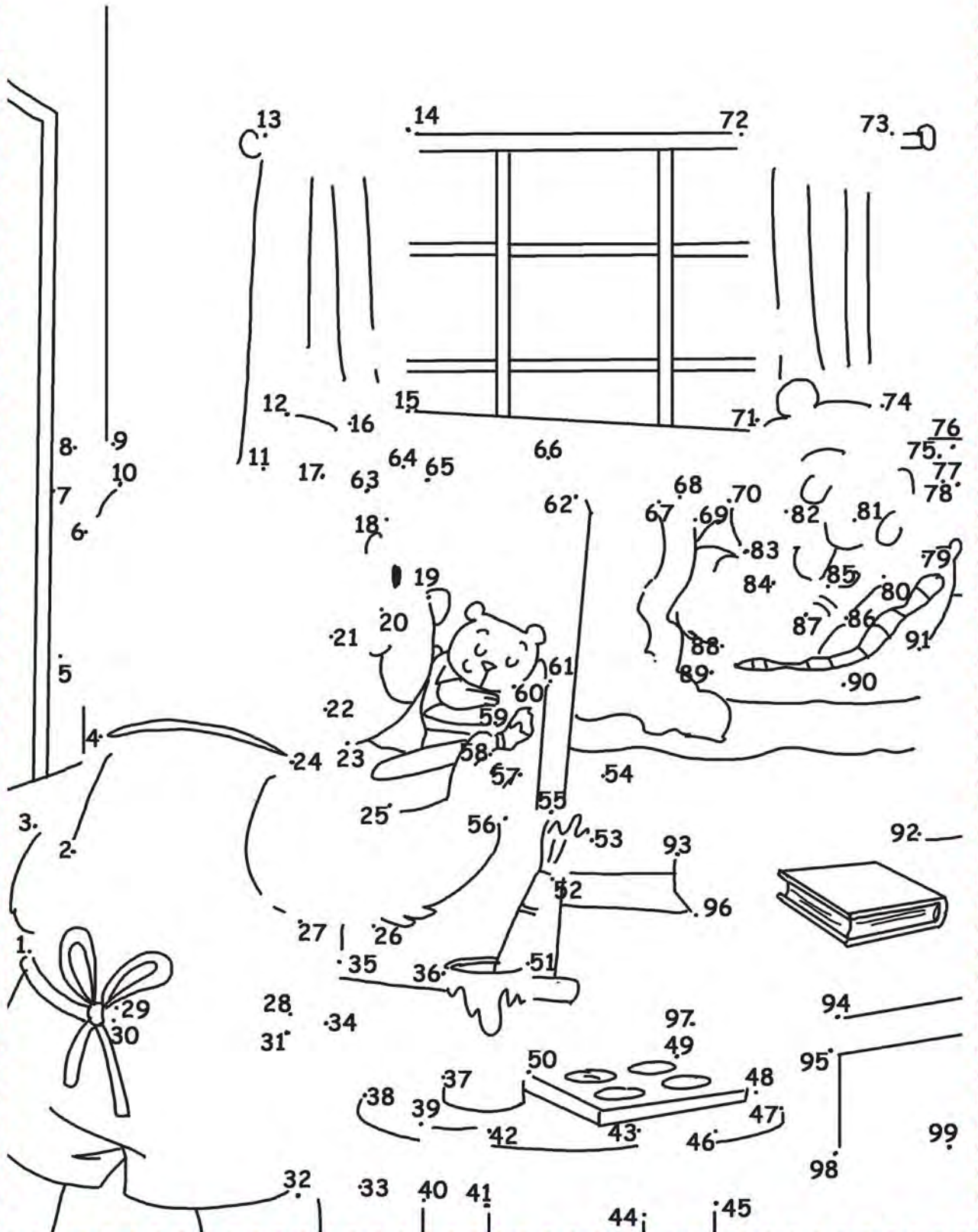
वे लोग जो इस देशव्यापी महामारी के समय लोगों को लूटते हैं, उन्हें एक सबक अवश्य सिखाया जाना चाहिए.

मैं ने सोचा था कि मैं काफी रुपए बनाऊंगी, लेकिन अब मेरे पास कुछ भी नहीं है.

आप को रुपए बनाने के बारे में नहीं सोचना चाहिए, तब हो सकता है कि आप कुछ कमा लेंगी.

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं
और चित्र पूरा करें.



बीच पर एक दिन

इस शब्द सूची में बीच के बारे में सभी चीजों को ढूँढ़ें। शब्द पीछे की ओर एक कोने से दूसरे कोने की ओर और सीधी रेखा में रखे गए हैं। इन्हें ढूँढ़ें।

टौ	वे	ल	चौ	गा	गौ	बे	ल	चा	रे	प	प	ड़ा
टी	ल	बा	वि	ना	प	घौ	मौ	गौ	त	प	क	अ
चौ	ची	मूं	ग	फ	ली	ई	कं	नू	म	के	बौ	धू
न	ची	ट	सू	म	व	रि	कं	प	ह	इ	ले	प
ई	ची	ट	गे	ची	नू	फ	प	कू	ल	ट	फौ	छां
गा	पू	आ	अ	स	नो	प	कि	नौ	श	कं	ना	ह
फ	पा	मं	ल्	मु	प	ज	ड	फि	री	क	ई	जं
इ	बौ	ई	घ	द्र	घ	ए	ली	चौ	गो	के	बो	खा
ला	पु	ब	प	मं	मां	जे	पि	फो	ग	द	र्फ	री
क	नि	क	पि	मं	पि	ल	प	फ	लौ	प	स	कं
अ	द	ल	व	ज	ण	नि	र	र्ट	पि	टा	कं	झ
प	मं	ज	ण	नि	कं	र्ट	पि	ह	कं	झ	र्	प
ड़	मं	धू	प	च	श्	मा	पि	कं	ल	झ	प	ख

उत्तर: अंतिम पृष्ठ पर देखें.

द्वारा प्रियंका बंसल





वजन निकालो

कहानी • ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

पिकनिक पर आए छात्रों को संबोधित करते हुए गुरुजी ने कहा, “क्या तुम लोग इस गधे का वजन बता सकते हो?” उन्होंने वहां चर रहे एक गधे की ओर इशारा कर के कहा, “मैं यह देखना चाहता हूं कि कौन इस का सटीक वजन बता सकता है.”

सभी छात्र एकदूसरे का मुंह देखने लगे. उन्हें यह समझ नहीं आया कि बिना तराजूबाट के वजन कैसे किया जा सकता है.

“आप लोगों के पास सोचने के लिए 5 मिनट का समय है,” उन्होंने इधरउधर नजर दौड़ाते हुए कहा.

वे इस समय एक नदी के किनारे खड़े थे. पास में काली मिट्टी का खेत था, जिस के किनारे घास उगी हुई थी. उस के पास एक पत्थर का टीला था. कुल मिला कर मौसम और जगह दोनों मजेदार थीं. यहीं उन्होंने अपना कैंप लगा रखा था.

“क्या नहीं सर,” तभी रीना ने कहा, उस के हाथ में एक लोहे का स्केल था. वह उस की ओर देख कर बोली, “में गधे का अनुमानित और सही वजन बता सकती हूं,” कहने के साथ ही वह गधे के पास गई. उस के खूर कीचड़ में सने हुए थे. वह उन्हें देखना चाहती थी.

तभी गुरुजी ने कहा, “तुम गधे के पीछे मत जाना यह अपने बचाव में पछाड़ मारता है इसे टंगड़ी मारना कहते हैं.”

यह सुन कर सभी छात्र हंस पड़े, उन्हें आज टंगड़ी मारने का अर्थ पता चला था.

“और यदि इस की टंगड़ी लग गई तो मुंह के सारे दांत बाहर आ जाएंगे,” यह एक शरारती छात्र ने कहा तो दूसरा छात्र बोला, “तब तो रमेश को गधे के पीछे पहुंचा दो. इस का टंगड़ी खाने का शौक पूरा हो जाएगा,” यह कहते हुए दूसरा छात्र होहो कर जोरजोर से हंसने लगा.

तभी रीना ने गधे के सामने स्केल लहराई. गधा डर कर थोड़ा पीछे खिसक गया.

गधा मिट्टी पर खड़ा था इसलिए उस के खूर मिट्टी में दब गए थे. जिस से गधे पैर के निशान मिट्टी में बन गए थे. रीना ने खूर के निशानों की गहराई मापी फिर अपने पांव के निशान मिट्टी पर बनाए और उन की गहराई माप ली. तब दोनों निशानों की गहराई की तुलना की. तब उस ने बताया, “इस गधे के खूर के निशान की गहराई मेरे पांव के निशान की गहराई से पांचगुना ज्यादा है इसलिए गधे का वजन मेरे वजन से पांचगुना अधिक है.

“यानी इस का वजन मेरे

वजन के 38 किलोग्राम का पांचगुना यानी 190 किलोग्राम है.”

रीना के यह कहते ही सभी छात्रों ने तालियां बजा दीं. उस का अनुमान वास्तव में छात्रों की निगाह में सही था.

“शाबाश रीना, तुम ने ठीक अनुमान लगाया है,” यह कहते हुए गुरुजी ने कहा, “अब कौन बताएगा इस गधे का सही वजन. गुरुजी ने शरारती छात्रों की ओर देख कर आंख से इशारा किया.

रमेश इसी ताक में था. वह झट से बोला, “सर, मैं बताऊंगा सही वजन,” यह कह कर उस ने अपने दोस्तों की ओर देख एक आंख दबा दी. वे उस की शरारत समझ गए थे. वे बोले, “हां सर, हम इस का सही वजन बता सकते हैं.”

“तो आ जाओ मैदान में,” गुरुजी ने उन्हें मैदान की ओर इशारा कर कहा.

रमेश अपने 4 दोस्तों के साथ गधे के पास आया. फिर अपने दोस्तों की ओर इशारा कर के बोला,





गधा वजन ज्यादा होने पर जोरजोर से चिल्लाने लगा.

तब रमेश ने उस छात्र को वापस उतार दिया.

“अब तुम सब भी उतर जाओ,” रमेश ने यह कहते हुए बारीबारी से छात्रों की ओर देखा. फिर उन का वजन जोड़ने लगा.

“सर, इस गधे का वजन 162 किलोग्राम है,” रमेश ने कहा तो गुरुजी ने पूछा, “तुम ने इस का वजन कैसे निकाला?”

“एकएक कर के इस गधे पर बैठ जाओ. मैं इस की रस्सी पकड़ता हूँ,” रमेश ने रस्सी उस की पकड़ ली.

पहले एक छात्र बैठा फिर दूसरा बैठ गया. मगर जब तीसरा छात्र गधे पर बैठने लगा तो गधा जोरजोर से ढेंचूँढेंचू कर के चिल्लाने लगा. यह देख कर छात्र सहम गए. मगर रमेश बोला, “सर, यह गधा कह रहा है कि अब बस करो, ज्यादा छात्र बैठे तो मैं मर जाऊंगा.”

“अच्छा,” गुरुजी ने कहा, “तो तुझे इस की भाषा समझ आती है?”

यह सुन कर सभी छात्र हंस पड़े.

रमेश अपनी बात का अर्थ समझ कर झोंप गया. फिर एक हल्केफुल्के छात्र की ओर इशारा कर के उस ने कहा, “अब तू आ.”

उस छात्र के पास आते ही गधा फिर चिल्लाया. मगर रमेश ने उस छात्र को उठा कर. गधे पर बैठा दिया.

इस पर रमेश बोला, “सर, इस पर 3 छात्र बैठे थे. चौथे छात्र के बैठते ही गधा चिल्लाने लगा था. इस का मतलब यह था कि वह गधा अब ज्यादा वजन सहन नहीं कर सकता है. इसलिए उस का वजन इन 3 छात्रों के वजन के बराबर है.”

“और 3 छात्रों का वजन तुम्हें कैसे मालूम?” गुरुजी ने पूछा तो रमेश बोला, “सर, पिकनिक पर आते समय आप ने सभी की लंबाई और वजन किया था इसलिए मैं ने अपने दोस्तों का वजन याद रख लिया था.”

“ओह, तुम्हारी याददाश्त तो अच्छी है,” गुरुजी रमेश को शाबाशी देते हुए बोले,” मगर तुम्हारा अनुमान गलत भी हो सकता है. कभीकभी 40 किलोग्राम का आदमी 80 किलोग्राम वजन भी उठा लेता है. तुम ने हम्माल को देखा होगा. ये अभ्यास करकर के इस तरह की महारत हासिल कर लेते हैं.”

“हां सर, आप ठीक कहते हैं,” रमेश ने कहा तो गुरुजी दूसरे छात्रों से बोले, “अब इस का सटीक वजन कौन बताएगा?”

विकास कब से चुपचाप बैठा था, वह कुछ सोच कर बोला,” सर, मैं बता सकता हूँ.”

“तो आ जाओ, तुम्हारा भी स्वागत है,” गुरुजी के यह कहते ही विकास गधे के पास चला आ.

वहां पहुंच कर उस ने गधे के मालिक को आवाज दी. उस को कुछ समझाया और फिर उस की सहायता से गधे को नाव पर चढ़ा दिया.

गधे के नाव पर चढ़ते ही नाव थोड़ी से पानी में डूब गई. इसे देख कर विकास ने नाव जहां तक पानी में डूबी थी वहां पर निशान लगा दिया. “गधे को नाव पर चढ़ाने से नाव पानी में यहां तक डूबी है,” वह जोर से बोला और उस ने मालिक की सहायता से गधे को वापस नाव में उतार दिया.

“अब आप एक काम कीजिए,” विकास ने 2 छात्रों की ओर इशारा कर के कहा,” तुम 2 छात्र इस नाव पर चढ़ जाइए.”

छात्र बड़े खुश हुए. उन्हें नाव पर बैठने को मिल रहा था. इसलिए जब दोनों छात्र नाव पर चढ़े तो उस ने नाव पर लगा निशान देखा वह निशान पानी से थोड़ा ऊपर था. उसे देख कर विकास ने सब से कम वजन वाले छात्र की ओर इशारा किया,” तुम इधर आ जाओ.”

वह इशारा समझ कर नाव पर चढ़ गया. तब विकास ने उस निशान को देखा. वह अभी भी पानी से दूर था. उस ने रीना को आवाज दे कर कहा, “रीना, घी और तेल के एकएक किलोग्राम वाले पैकेट ले कर आना.”

रीना दौड़ कर कैंप में गई और पैकेट उठा कर ले कर आई. उस ने वे पैकेट विकास को दे दिए.

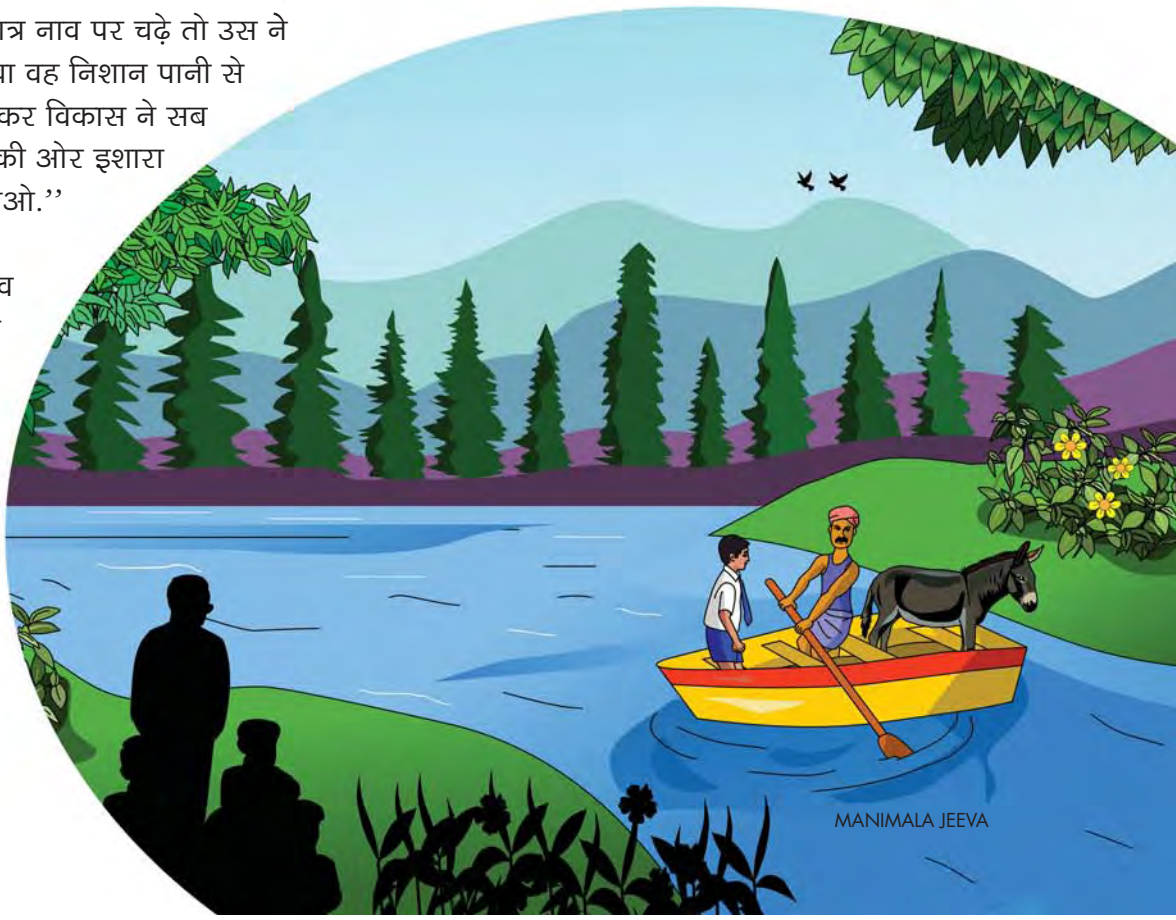
विकास ने एकएक किलो घी, तेल और अन्य सामान वाले पैकेटों को नाव पर रखा जैसे ही नाव के निशान ने पानी को छुआ तो वह बोला,” सर, गधे का वजन इन सब के वजन के योग के बराबर है.”

गुरुजी ने सभी से उन का वजन पूछा, अंत में नाव में रखे पैकेट का वजन लिख कर सभी को जोड़ दिया.

“ओह, गधे का सटीक वजन 182 किलोग्राम है,” कहते हुए गुरुजी ने विकास को शाबाशी दी,” शाबाश विकास, तुम ने गधे का बहुत सटीक व सही वजन बताया है.”

यह सुन कर सभी ने ताली बजा दी.

यह देख कर दूर खड़ा गधे का मालिक अपने गधे का वजन जान कर खुश हो गया.





- बताओ तो जानें**
1. ठंडा या गरम मुझ में डालो
कोई भी चीज मुझ में भरो
वादा मेरा थामे रखूंगा
चुस्कियां ले कर तुम पी सकोगे.
 2. मेरे पहिए हैं बड़ेबड़े
मक्खियां मंडराती मेरे ऊपर
नाक तो तुम बंद कर लेते हो
पर आंखों को कभी बंद नहीं करते.
 3. सफेद और चमकदार हूं
बच्चे बनाते मुझ से ऐंजल
पहाड़ों पर जब छा जाता हूं.
घाटियों को बनाता मनमोहक.
 4. मेरे अंगूठे और उंगलियां
लेकिन मैं जिंदा नहीं
मेरे हैं कई प्रकार
सब के हाथ रखूं सुरक्षित.

- देखें तुम कितना जानते हो**
1. पेंग्विंस क्या खाते हैं?
(क) सब्जियां
(ख) फल
(ग) रोटियां
(घ) मछली
 2. चींटियों के एक समूह को इंगित करने के लिए इन में से कौन से शब्द का इस्तेमाल किया जाता है?
(क) कालोनी
(ख) हिल
(ग) क्रश
(घ) अपार्टमेंट
 3. एक साल में कितने सप्ताह होते हैं?
(क) 33
(ख) 45
(ग) 52
(घ) 7
 4. कौन सी अवस्था ऐंटी क्लौकवाइज यानी घड़ी की विपरीत दिशा में चलना कहलाती है?
बायां या दायां?
(क) दायां
(ख) बायां
(ग) पूर्व
(घ) वृत्त

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1-कप, 2-कैड, 3-बर्फ, 4-दस्तावा.
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1-घ, 2-क, 3-ग, 4-ख.

मजेदार विज्ञान

धुएं से मोमबत्ती को फिर से जलाएं

एक मोमबत्ती के धुएं में क्या है, आइए, इस की खोज करें.

आप को चाहिए :

- एक मोमबत्ती
- एक मैच बॉक्स (वयस्क की देखरेख में इस्तेमाल करें.)



ऐसा करें :



1. चित्र के अनुसार एक स्थिर सतह पर एक मोमबत्ती को चिपका दें और उसे जलाएं.

2. मोमबत्ती 2 मिनट बाद फूंक मारकर बुझा दें. फिर तुरंत माचिस की एक तिल्ली जलाएं और इसे मोमबत्ती की बत्ती से निकल रहे धुएं के पास ले जाएं.



देखें :

जब आप फूंक मार कर मोमबत्ती को बुझाते हैं तो मोमबत्ती की बत्ती से धुआं निकल कर ऊपर उठता है. जब आप धुएं के पास जलती माचिस की तिल्ली को ले जाते हैं तो मोमबत्ती जल उठती है.



सोचें :

बत्ती से माचिस की तिल्ली के छुए बिना ही मोमबत्ती फिर से कैसे जल उठती है?

आग जलने के लिए गरमी और ऑक्सीजन की जरूरत होती है. इसीलिए जब मोमबत्ती को खुले स्थान पर जलाया जाता है तो यह आराम से जलती है. लौ से निकलने वाली गरमी मोमबत्ती को लिक्विड रूप में पिघला देती है इस के बाद यह वाष्प में बदल जाता है जो कि गरम गैस है. वाष्प हवा में मौजूद ऑक्सीजन में मिलता रहता है. ऐसा तब तक जारी रहता है जब तक की मोमबत्ती का मोम खत्म नहीं हो जाता. हमारे इस प्रयोग में जब हम मोमबत्ती को फूंक कर बुझा देते हैं. तो धुएं का एक स्तंभ ऊपर उठने लगता है. इस धुएं में गरम मोम का वाष्प होता है जो ऑक्सीजन में मिल जाता है. इसलिए जब आप इस धुएं के निकट माचिस की जलती तिल्ली ले जाते हैं तो मोम वाला वाष्प आग पकड़ लेता है और मोम की बत्ती फिर से जलने लगती है.

पता करें :

अग्निशामक कैसे काम करता है?

जैसा कि हमारे इस प्रयोग में पता चला है कि आग के जलते रहने के लिए ऑक्सीजन और गरमी की जरूरत होती है. अग्निशामक में कार्बनडाइऑक्साइड गैस और अन्य कैमिकल्स होते हैं जो सफलतापूर्वक ऑक्सीजन और गरमी को काट कर अलग कर देते हैं. वे आग के ऊपर पाउडर की एक सतह बनाते हैं जो इस के आसपास के ऑक्सीजन की सप्लाई को काट देते हैं. बिना ऑक्सीजन के आग जलनी बंद ही जाती है.



freepik.com

बच्चों ने किया लौकडाउन ऐंजौय

“लौकडाउन के दौरान मैं ने अपना समय गेम्स जैसे सांपसीढ़ी, लूडो व कैरमबोर्ड वगैरा खेल कर बिताया. मैं ने अपने मम्मीपापा का घर के कामों में भी मदद की. मैं ने किताबें पढ़ी और टैलीविजन भी देखा. मैं ने अपना होमवर्क पूरा कर लिया और मम्मी ने जो स्वादिष्ट खाना हमारे लिए बनाया. उसे खा कर हम ने ख़ूब ऐंजौय किया.”

आर्या मंडलोई, 10 वर्ष, भोपाल

“लौकडाउन के दौरान हम घर के अंदर ही रहे. छुट्टियों का मतलब होता है, मजे करना, लेकिन इस बार हमारे मम्मीपापा ने हमें बताया कि हम बाहर नहीं जा सकते. इसलिए हम घर पर ही बहुत और बहुत सारा होमवर्क भी किए. हालांकि क्लासेज उतने मजेदार नहीं रहे जितने कि हमारे स्कूल होते हैं. मैं ने अपने स्कूल और दोस्तों को बहुत मिस किया है.”

प्रियांश रावैड, 7 वर्ष, पुणे

“जब लौकडाउन की घोषणा की गई थी, तो मैं, मम्मी और पापा सदमे में आ गए थे. हम 21 दिनों तक घरों में बंद कैसे जी सकते थे. मेरी मम्मी घर से काम करने लगी थीं और घर की सफाई करने में मैं ने पापा की मदद की. मैं ने अगले साल के स्कूल की पढ़ाई भी शुरू कर दी. पापा और मैं इनडोर गेम्स खेला करते. मैं अपने दादाजी के साथ समाचार भी देखा करता और उन के साथ लूडो खेलता.”

सक्षम पाठक, 10 वर्ष, मथुरा

“मुझे फुटबॉल खेलना पसंद है लेकिन बहुत मैं बाहर जा नहीं सकता था, इसलिए मैं ने घर में ही खेलने की जगह बनाया जहां मैं ने अलगअलग इंडोरगेम्स खेले, जैसे शतरंज, कैरमबोर्ड और लूडो. मेरे मम्मीपापा ने भी मेरा साथ दिया. मैं ने लौकडाउन के पहले एक डांस क्लास जौइन किया था. चूंकि मैं क्लास में जा नहीं सकता था, इसलिए मैं ने घर पर खुद ही डांस के स्टैप्स बनाए. मेरी मम्मी ने मुझे नूडल्स पकाना सिखाया, जो बड़ा ही मजेदार और जायकेदार था. मैं ने अपने पापा की घर के कामों में भी मदद की. हम ने मूवी एकसाथ देखी.”

स्पंदन जाधव, 13 वर्ष, मुंबई

“लौकडाउन के दौरान मैं ने ख़ूब मजे किए. मैं ने खाना पकाने में मम्मी की सहायता की और उन के द्वारा बनाए खाने का ख़ूब स्वाद भी लिया. मैं सुबह टैलीविजन देखती थी. ढेर सारा खाना खाती और रात में दोपहर में सो जाती. शाम के समय खेलती और रात में फिर से स्वादिष्ट खाना खाती. मुझे अपने दोस्तों की कमी बहुत ही खलती क्योंकि वे मेरे साथ खेलते थे, मेरे साथ रहते थे और मेरे साथ लंच करते थे लेकिन अब मेरे आसपास दोस्त नहीं हैं. उन के बिना मैं बोर हो गई हूं. उन के बिना मैं बोर हो गई. मुझे उम्मीद है कि हम जल्द ही मिलेंगे.”

रियान दत्ता, 9 वर्ष, रांची

“लौकडाउन के दौरान मैं अपने परिवार के साथ इनडोर गेम्स खेलता था। हम आपस में खूब लड़ते भी थे। मैं जब भी निराश होता, तो दादी के साथ समय बिताता जो मुझे बहुत सारी कहानियां सुनाती थीं। मुझे अपने क्लासरूम की कमी बहुत खलती खासकर मेरे सब से अच्छे दोस्त, स्पंदन, रजत, राहुल, प्रशांत और योजना। जब लौकडाउन की घोषणा हुई तो मुझे बहुत बुरा लगा था कि हमारे ऐंजाम रद्द हो गए थे और हम स्कूल नहीं जा सकते थे। मैं अपने दोस्तों के साथ रोज कोरोना वायरस पर बातें किया करता था और हमारे चारों ओर क्या घट रहा है, इस बारे में एकदूसरे को बताता था।”

करन नागेश मानकर, 12 वर्ष, मुंबई



“लौकडाउन के दौरान मैं ने अपना समय परिवार के लोगों के साथ बिताया। मैं ने मम्मी से खाना बनाना सीखा। ड्राइंग की ओर किताबें पढ़ीं। मैं अभी भी अपनी ड्राइंग्स को सुधारने की कोशिश कर रही हूं, क्योंकि मुझ से मनुष्य के चित्र ठीक से नहीं बने। रोनाल्ड डहल द्वारा लिखित और क्वेटिंग ब्लैक द्वारा चित्रित किताब मेटिल्डा को मैं ने पढ़ा। मैं सामान्यतौर पर रोनाल्ड डहल की किताबें पढ़ा करती हूं, क्योंकि वह मेरी पसंदीदा लेखक हैं। मैं अपनी मम्मी के साथ लूडो और जेंगा जैसे खेल खेला करती। शाम के समय हम योगा की प्रैक्टिस एकसाथ करते। मैं दादीमां के साथ कैरम भी खेलती, क्योंकि वह कैरम की महान खिलाड़ी हैं। चूंकि मैं अपने दोस्तों से नहीं मिल सकती थी, क्योंकि लौकडाउन है इसलिए हम वीडियो कोल किया करते और ऑनलाइन गेम्स खेला करते।”

सूफी मनीषा संतोष, 11 वर्ष, नवी मुंबई

मैं लौकडाउन के दौरान जरा भी निराश नहीं हुई। क्योंकि हर दिन मैं अपनी बहन के साथ खेलने के लिए नए गेम्स की खोज करती थी। हम ने एकसाथ बहुत मजे किए। हम इनडोर क्रिकेट ऊन की बनाई बॉल से खेलते जिसे घर में ही बनाया था। सभी के लिए वैजिटेबल प्रिंट काइर्स बनाए। मैं ने अपनी बहन के तरहतरह के हेयरस्टाइल्स भी बनाने की कोशिश की।”

रुपाली मांचेकर, 12 वर्ष, पटना

“चूंकि लौकडाउन शुरू हो चुका था, मुझे स्कूल की सारी चीजें खलने लगी थी। मैं ने समयसमय पर छुट्टियों का आनंद लिया है, लेकिन यह छुट्टी बहुत ही लंबी हो गई है। स्कूल जाने से हमें कम से कम 6 से 7 घंटे तक कुछ करने को मिलता है। मैं निराश होता था लेकिन मैं कुछ किया करता। दिन में किसी और की मदद करता स्कूल हम सभी को दोस्त बनाने का एक बड़ा अवसर देता है, जैसे कि हम जब किसी प्रोजेक्ट पर एकसाथ काम करते, लंच करते या खाली समय एकसाथ बैठते थे। ऐसा करना बहुत ही मजेदार होता और हम बहुत मजे करते थे और बहुत सी बातें सीख लेते थे। मुझे अपने टीचर्स की कमी बहुत खलती है और हमें यह भी खलता है कि कैसे हम स्कूल में कैसे बहुत से अजूबे बातों को सीख लेते थे।”

शुभ वाष्ण्य, 12 वर्ष, यूएसएस

मेरा भाई, बहन और मैं ने घर पर बहुत सारा समय खेलने में बिताया। हमें साइंस के कुछ किट्स गिफ्ट्स के रूप में मिले थे और उन के साथ कभी खेलना नहीं था यानी खेल में समय बिताना नहीं था। लेकिन लौकडाउन के समय हमें काफी समय मिल गया था। हम सभी ने कीचड़ बनाया और लावा (ज्वालामुखी से निकले राख) से एक लैंप बनाया। इसे बनाना बड़ा ही मजेदार था।

जायडेन लोपेज, 7 वर्ष, दुबई



चीकू

चित्रकथा : दास



पहरेदार गिंगो शाम के समय स्कूल की पहरेदारी कर रहा था.

मैं बहुत थक गया हूं. यहां बैठ कर थोड़ा आराम कर लूं.



वयस्क शिक्षा केंद्र

गिंगो वयस्कों के शिक्षा केंद्र के सामने बैठ गया. उस ने अंदर लोगों को बातचीत करते सुना.

वे किस के बारे में बात कर रहे हैं?



इसे उठाओ...अब नीचे लाओ. ठीक है, अब इसे बीच से काट डालो.



वे अंदर क्या कर रहे हैं?



इसे खींचो और नीचे ले आओ. ठीक है, अब इस का सिर काटो.



क्या, वे कुछ गड़बड़ कर रहे हैं. मुझे पुलिस को जरूर खबर पहुंचानी चाहिए.



गिंगो पुलिस स्टेशन की ओर भागा. इंस्पेक्टर टेबल पर सो रहा था.

सर, मेरे साथ चलिए. वहां कुछ बुरा होने वाला है.



इंस्पेक्टर यह सुन कर घबरा गया और टेबल से नीचे गिर गया.

आउच, मेरी कमर टूट गई. तुम हमेशा बुरी खबर लाते हो.

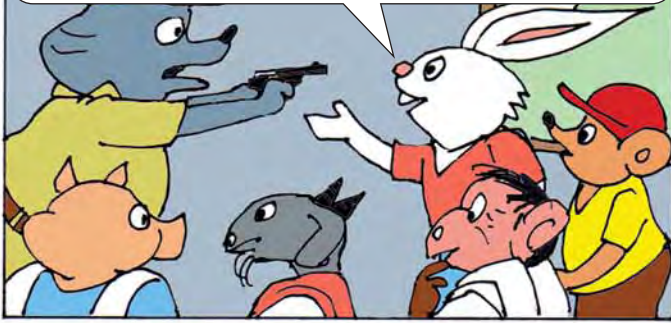


वे तेजी से भागे जितना कि वे भाग सकते थे और शिक्षा केंद्र पर पहुंचे.

ठहरो, तुम कानून के हाथों से भाग नहीं सकते.



लेकिन हम ने किया क्या है कि हम यहां से भागने की कोशिश करेंगे? हम तो यहां पर वयस्कों को पढ़ा रहे हैं.
बस, और कोई बात नहीं.



डेड बौडी को ढूंढो. इसे यहीं कहीं छिपाया गया होगा.



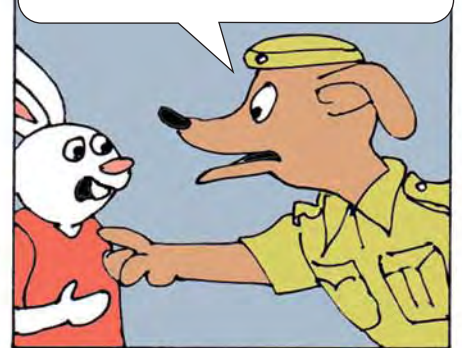
आप यहां एक डेडबौडी को क्यों ढूंढना चाहते हैं?



मुझे सूचना मिली है. यहां पर किसी पर हमला किया गया है.



हां, मैं ने यह बात अपने कानों से सुनी है. किसी के सिर को काटा गया है.



अच्छा, तो यह बात है, यह देखो, इन किताबों को, हम उन्हें अल्फाबेट सिखाते थे. ऊपर खींचो, फिर नीचे करो और इसे बीच से काट दो. इस से ए बनेगा.



और मैं बता रहा था, इसे नीचे खींचो और सिर काट दो. इस से टी बनेगा.



क्या अल्फाबेट्स सिखाने का यही तरीका है?



तुम्हारी गलत सूचना के कारण ही मुझे कमर में चोट लगी और मैं घायल हो गया.



मुझे माफ कर दीजिए इंस्पेक्टर साहब. मैं ने तो आप को सिर्फ वही बताया जो मैं ने सुना था. मुझे चाहिए था कि किसी निष्कर्ष को निकालने के पहले इसे अच्छी तरह से देख लिया करूंगा.





बच गया नौटी

कहानी • डा. ममता मेहता

“नौटी, जल्दी करो, तुम्हें स्कूल नहीं जाना क्या?” शोकेस पर चढ़े नौटी चूहे ने सुना तो और ऊपर चढ़ गया।

उस की मां जूही चुहिया ने फिर उसे आवाज दी, “नौटी, कहां हो? स्कूल के लिए देर हो रही है। तुम ने यूनीफ़ॉर्म पहनी की नहीं?” नौटी सुनीअनसुनी कर अपनी मस्ती में मगन था।

मम्मी झल्लाई, “नाक में दम कर रखा है इस ने,” यह सुनते ही नौटी चूहे ने शोकेस से जंप मारा और कांच के एक कीमती शोपीस के साथ नीचे आ गिरा। शोपीस चूरचूर हो गया। अपने कीमती शोपीस के टुकड़े देख उस की मां का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया।

उन्होंने नौटी को पकड़ा और एक चांटा रसीद किया। नौटी जोरजोर से रोने लगा। ‘पहले ही स्कूल के लिए देर हो रही थी ऊपर से अब ये मुसीबत,’ मां सोचने लगीं।

मम्मी रोते हुए नौटी को घसीट कर अंदर बाथरूम में ले गई तैयार करते हुए लगातार उसे डांट रही थीं।

“मैं ने हजार बार कहा है तुझ से कि अपनी शरारतें को कम कर, पर तेरी कुछ समझ में ही नहीं आता। किसी दिन ये शरारतें तुझे भारी पड़ जाएंगी। आज ही अगर कांच से कट जाता तो? कांच के टुकड़े लग जाते, शोकेस से कूदने पर हड्डी वगैरा टूट जाती। तू अपने साथ हमें भी परेशानी में डालेगा। संभल जा जरा भैया के जैसे पढ़ाई में मन लगा। कुछ अच्छे काम कर.”

मम्मी उसे बड़बड़ कर रही थीं, पर नौटी उन की बातें सुन ही नहीं रहा था। वह सोच रहा था, ‘मम्मी हर

समय उस के पीछे क्यों पड़ी रहती हैं. मुझे कभी मजा नहीं करने देतीं. हर दिन कहती हैं, स्कूल जाओ, हाथमुंह धोओ, अपना होमवर्क करो. पढ़ाई...पढ़ाई...पढ़ाई... न टीवी, न डीवीडी, कोई अन्य खेल खेलने देतीं. 'भैया रिंपी के बस, गुण गाती रहती हैं. मम्मी को इंप्रेस करने के लिए भैया सारा दिन किताबों में घुसा रहता है.'

दरअसल, नौटी नाम के अनुरूप ही बहुत नौटी था. उस की शरारतों से घर वाले ही नहीं बल्कि कालोनी वाले भी बहुत परेशान थे. नौटी घर में रहता तो कभी सोफे पर चढ़ कर उछलकूद करता तो कभी बेड पर. वह कभी किताबों की रेक पर चढ़ता तो कभी शो केस पर. अगर वह उछलकूद से थकता तो मोबाइल पर गेम खेलने लगता या भैया का टैब ले कर उस से छेड़छाड़ करता रहता. जब वह उस से भी ऊब जाता तो टीवी पर अपना पसंदीदा कार्टून टैम एंड जैरी देखने बैठ जाता.

टैम एंड जैरी उस का पसंदीदा कार्टून शो था. उस में जिस तरह जैरी टैम को परेशान करता, उस को बेवकूफ बनाता नौटी को उस में बहुत ही मजा आता.

जब मां उसे समय बरबाद करने के लिए डांटती तो वह बाहर निकलता और पड़ोसियों के घर के दरवाजे की घंटी बजा कर भाग जाता. पीछे से आंटीयां चिल्लाती रहतीं, "ठहर शैतान, अभी तेरी मां को बुलाती हैं," लेकिन नौटी पर इन सब का कोई असर नहीं पड़ता. मां नौटी को डांटती पर उस के कान पर जूं तक न रेंगती.

एक दिन घबराया भैया दौड़ता हुआ घर आया और कांपता हुआ मां से बोला, "अपने इलाके में बिल्लों ने चूहे पकड़ने के लिए जाल बिछा रखा है. महंगी चौकलेट्स और लुभावनी चीजें रख कर व चूहे ट्रेप करते हैं हम सब को सावधान हो जाना चाहिए."

यह सुन कर मम्मी बहुत घबरा गई. "रिंपी, कृपया नौटी को सावधान रहने के लिए कहो. मैं तुम्हारे पापा को बताती हूं." जूही ने पापा को अभिवादन

करते हुए उन्हें बिल्लियों के बारे में बताया.

पापा चिंतित दिखे, "हां, सुना तो मैं ने भी है. तुम सावधान रहो व बच्चों का ध्यान रखो. रिंपी तो सावधानी से संभलसंभल कर चलने लगा पर नौटी तो पहले जैसा ही बिंदास, बेफिक्र और अपनी शरारतों में मस्त रहा. उस दिन भी वह ऐसे ही साइकिल चलाने नीचे जाने लगा. भैया ने मना किया, "अकेले मत जाओ, तुम्हें पता है न बाहर खतरा है."

नौटी बोला, "मैं आप के जैसा डरपोक व बेवकूफ नहीं हूं. मुझे इन बिल्लों से निबटना बहुत अच्छे से आता है."

भैया ने समझाया, "अभी तुम बहुत छोटे हो ज्यादा होशियार मत बनो. जैसे मैं कह रहा हूं वैसा ही करो नहीं तो अभी मम्मी को बुलाता हूं."

"हा, हा, आया बड़ा मम्मी का चमचा, बुला लो जिसे बुलाना है. मैं तो चला," नौटी जल्दी से नीचे उतरा.

भैया चिल्लाने लगा, "मम्मी, मम्मी, नौटी अकेले साइकिल चलाने जा रहा है."

मम्मी वहीं से चिल्लाई, "अरे, रोको उसे, मैं आ रही हूं."





पर वह तो खुद को जैरी समझता था. उस ने कहा, “तुम लोग डरो मत, मैं देखता हूं वह बिल्ला हमारा क्या बिगाड़ता है?”

नौटी अपनी अकड़ दिखा रहा था कि बिल्ला एकदम बौक्स के ऊपर आ गया. 3-3 चूहे देख उस के मुंह में पानी आ गया.

लेकिन जब तक मम्मी बाहर आई, नौटी गायब हो गया. साइकिल चलातेचलाते वह घर से दूर निकल गया.

एक जगह उसे एक बौक्स दिखा बौक्स में झूले जैसे रोलर लगे थे और अंदर ढेर सारी चौकलेट्स पड़ी थीं. इन्हें देख कर नौटी खुश हुआ. अंदर 2 बच्चे थे उस के जैसे ही रोलर पर झूल रहे थे.

नौटी ने साइकिल किनारे खड़ी की और आव देखा न ताव बौक्स में कूद गया. सब से पहले उस ने चौकलेट्स उठाई, कुछ जेब में भरीं और कुछ मुंह में दूंस कर झूलने लगा. वे तीनों अंदर मस्ती कर झूलने लगे.

खेलतेखलते अचानक उन्हें बिल्ले की आवाज सुनाई दी. वे दोनों बच्चे सतर्क हो गए, जबकि नौटी खेलने में मस्त था. उन्होंने उस से कहा, “भागो, बिल्ला आ रहा है,”

“आज तो मजा आ गया,” वह जोरजोर से हंसने लगा. उस ने अपना पंजा बौक्स में डाला.

नौटी ने उस के पंजे को काटने की कोशिश की, पर उस ने पंजा घुमा दिया. नौटी उस की पकड़ में आतेआते बचा.

नौटी ने झूले पर चढ़ कर उस का हाथ काटना चाहा, पर रोलर होने की वजह से वह उस पर चढ़ नहीं पा रहा था. अब वह थोड़ा डरा. बिल्ले ने पंजा डाल कर एक चूहे को पकड़ लिया.



वह चिल्लाने लगा, “बचाओ, बचाओ,” पर वहां कौन उस की मदद करता.

नौटी भी घबराने लगा. उसे मम्मी की याद आने लगीं. बिल्ले की लाल चमकीली आंखें उसे डराने लगी. जैरी किस तरह टौम से बचता था याद करने पर भी उसे याद नहीं आ रहा था. अब क्या करे. वह उछलउछल कर बौक्स से बाहर आने की कोशिश करने लगा, पर बाहर आ ही नहीं पा रहा था. रोलर उसे बारबार नीचे गिरा देता.

इतने में उसे भैया और उन के दोस्तों की आवाज सुनाई दी, जो उस का नाम ले कर उसे पुकार रहे थे. भैया की आवाज से उस की हिम्मत बढ़ी.

आवाज से चौंक कर बिल्लो के पंजे से चूहा छूट गया और वह तुरंत एक कोने में भागा.

आवाज और पास सुनाई दे रही थी. बिल्ले ने उन की आवाज सुनी तो वह भी चौकन्ना हो गया और दबेपांव वहां से खिसकने लगा.

भैया के दोस्त जोरजोर से आवाज लगा रहे थे.

वह भी चिल्लाने लगा, “भैया, मैं यहां हूं,” लेकिन डब्बे के अंदर होने से आवाज बाहर नहीं जा रही थी.

अचानक रिंपी की नजर डब्बे पर पड़ी. वह तुरंत उस के पास आया. उस ने देखा, नौटी और 2 अन्य चूहे थे. देखते ही रिंपी को सारा माजरा समझ आ गया.

उस ने कहा, “घबरा मत नौटी, हम कोई उपाय करते हैं,” डब्बा उलटा हुआ तो उस का मुंह सामने की तरफ खुल गया. नौटी के साथ वे दोनों चूहे भी बाहर निकल आए.

नौटी दौड़ कर भैया से लिपट गया.

भैया उसे घर ले आए. घर पर मम्मी का रोरो कर बुरा हाल था. उन्होंने उसे अपने से चिपटा लिया.

वह भी मम्मी से चिपक कर रो रहा था, “मुझे माफ कर दो मम्मी, अब मैं ऐसी गलती दोबारा नहीं करूंगा, कोई शरारत भी नहीं करूंगा. अपनी पढ़ाई करूंगा, अच्छा बच्चा बन कर दिखाऊंगा.”

मम्मी ने उसे प्यार से चूम लिया. फिर वह भैया के गले लगा और बोला, “भैया मैं आप को अब बिलकुल भी तंग नहीं करूंगा,” मैं वादा करता हूं कि आप लोगों की बातमानूंगा.

नौटी ने भैया और उन के दोस्तों को धन्यवाद दिया. अगर आज वे नहीं होते तो बिल्ला उन 3 चूहों को खा जाता. पर भैया और उन के दोस्तों की वजह से तीनों की जान बच गई थी. ●



रिसाइकल्ड प्लांटर

सत्या श्रीवास्तव

स्मार्ट

रिसाइकल्ड यानी वह वस्तु जिस का इस्तेमाल पहले हो चुका है, उस का फिर से इस्तेमाल करें. घर पर पुराने मग का इस्तेमाल प्लांटर बनाने में करें.

आप को चाहिए : एक पुराना मग, गोंद, डोरी का एक बंडल.



ऐसे बनाएं :



1. मग के हैंडल के तल में एक गांठ बांधें.



2. मग के ऊपर गोंद लगा दें और फिर इस के चारों ओर डोरी को कोइल की तरह लपेट दें.



3. एक बार मग जब पूरी तरह से ढक जाए, तो इसे 30 मिनट सूखने के लिए छोड़ दें.



4. प्लांटर में मिट्टी डाल दें जैसा कि चित्र में है और एक पौधा लगा दें.

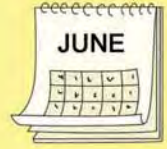
अब आप का प्लांटर बन कर तैयार है.



सुलझाएं

बमेल को बाहर निकालें.

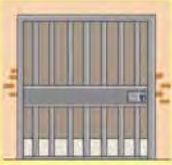
1



2



3



4



5



निम्न शब्दों को सुलझाएं.



- A. सा हा मां री
- B. र वें ऐ च ड
- C. व न सू मौ न व र्षा
- D. य ना डा र सौ
- E. मिं पू र्ति व ल ग



उत्तर: अंतिम पृष्ठ पर देखें.



बातूनी चाली

कहानी • कविता राय

चाली बंदर बहुत बातूनी था. जंगल के बाकी बच्चों की तरह उस की हौबी पेंटिंग, ड्राइंग, खेल या गीतसंगीत न हो कर सिर्फ बातें करना था.

वह जहां भी जाता था, वहीं बातें करने लगता था. उस के साथ सिर्फ बातें शुरू करने की देर थी, बस, वह पूरी कहानी सुनाने लगता था. उस के मम्मीपापा, टीचर सभी उस की इस आदत से

परेशान थे. सभी उसे समझाते थे कि कम बोला करो, सोचसमझ बोला करो, बिना मतलब की बातें करने से नुकसान होता है. पर उसे किसी के समझाने से कोई फर्क ही नहीं पड़ता था. वह एक कान से सुनता और दूसरे से बाहर निकाल देता था.

एक दिन चाली के घर अचानक कुछ मेहमान आ गए. मम्मी ने उसे समोसे लाने बाजार भेजा और

कहा, “जल्दी आना, वहां किसी से बातें करने मत बैठ जाना.”

“ठीक है मम्मी,” इतना कह कर वह बाजार की तरफ चल दिया. वहां दुकान पर पहुंच कर वह समोसे का ऑर्डर दे कर, अपनी बारी का इंतजार कर ही रहा था कि वहां खड़े बैडी सियार ने उस की तरफ बड़े ध्यान से देखते हुए पूछा, “अरे, तुम हरिरामजी के बेटे हो ना.”

बस, चार्ली के लिए इतना ही काफी था. उस ने कहा, “नहीं अंकल, मेरे पिताजी का नाम तो मनोहर और मेरा नाम चार्ली है. मैं ‘जंगल पब्लिक स्कूल’ में 5वीं कक्षा में पढ़ता हूं.”

यह सुन कर बैडी ने कहा, “अरे हां, सौरी बेटा, मैं तुम्हारे पिताजी को जानता हूं. वह बहुत बड़े आदमी हैं. मुझे उन्हीं से काम था.”

अब चार्ली इठलाते हुए शुरू हो गया, “अरे वाह, अंकल, आप तो सब जानते हैं. आप ने ठीक कहा, मेरे पिताजी बड़े बिजनेसमैन हैं. यहां मेन बाजार में ‘जंगल इलैक्ट्रॉनिक्स’ नाम से हमारी दुकान है. हमारी दुकान में मंहगे से मंहगे फ्रिज, टीवी, वाशिंग मशीन और एसी के अलावा इंपोर्टेड विदेशी इलैक्ट्रॉनिक सामान भी मिलता है. आप को वही खरीदना होगा, पर आप पापा से नहीं मिल पाएंगे, क्योंकि वे 3-4 दिन के लिए बाहर जा रहे हैं और दुकान पर कोई नहीं रहेगा.”

इतनी बातें करने के बाद चार्ली को याद आया कि घर पर मम्मी और मेहमान समोसों का इंतजार कर रहे हैं. वह समोसे ले कर दौड़ता हुआ घर पहुंचा, पर तब तक मेहमान जा चुके थे.

मम्मी बहुत ज्यादा गुस्से में थीं. उसे देखते ही बोलीं, “आओ बेटा, बहुत जल्दी आ गए, भाषण दे कर,





PARATHY

अब तुम ही खा लो सारे समोसे, क्योंकि मेहमान तो चले गए.

चार्ली शर्मिदा हो कर बोला, “मम्मी, मैं बेकार की बातें नहीं कर रहा था. वहां दुकान पर मुझे एक अंकल मिल गए थे. वे पापा को जानते हैं और उन्हें पापा से काम भी था,” इतना कह कर उस ने बैडी से हुई सारी बातें बता दीं.

उस की बातें सुन कर पापा एकदम परेशान हो गए. अब चार्ली को लगने लगा कि आज तो पापा से बहुत डांट पड़ेगी. किंतु पापा तुरंत घर से बाहर चले गए और चार्ली यह सोचते हुए, चुपचाप अपने कमरे में चला गया. “चलो, बच गए.”

अगले दिन सुबह जब चार्ली स्कूल के लिए तैयार हो रहा था, तो दरवाजे की घंटी बजी. मम्मी ने दरवाजा खोला तो सामने इंस्पेक्टर ‘चीता सिंह’ खड़े थे और उन के साथ आए 2 सिपाहियों ने बैडी को पकड़ रखा था.

बैडी को देखते ही चार्ली चिल्लाया, “अरे, ये तो कल वाले अंकल हैं, जिन्हें पापा से काम था.”

“इसे अंकल मत कहो, यह तो पक्का बदमाश है. यह घूमघूम कर बड़े लोगों की जानकारी इकट्ठा करता है और मौका पा कर वहां चोरी करता है. जंगल पुलिस को इस की कई दिनों से तलाश थी. अब जा कर यह

हाथ लगा है,” इंस्पेक्टर चीता सिंह बोले.

यह सुन कर चार्ली बड़ी हैरानी से बैडी की तरफ देखते हुए बोला, “मुझे लगा, यह अंकल अच्छे हैं और इन की मदद करनी चाहिए.”

“तुम्हें तो सब अच्छे ही लगते हैं. तुम बोलते समय ये नहीं सोचते कि किस से क्या बात करनी चाहिए. कल तुम्हारी बातें सुनने के बाद ही मुझे कुछ गड़बड़ लगा रहा था इसलिए मैं ने पुलिस को सतर्क कर दिया था. जिस से हम बच गए वरना तुम्हारे इन अच्छे अंकल ने तो हमारी दुकान साफ करने की पूरी तैयारी कर ली थी,” पापा ने थोड़ी तेज आवाज में चार्ली से कहा.

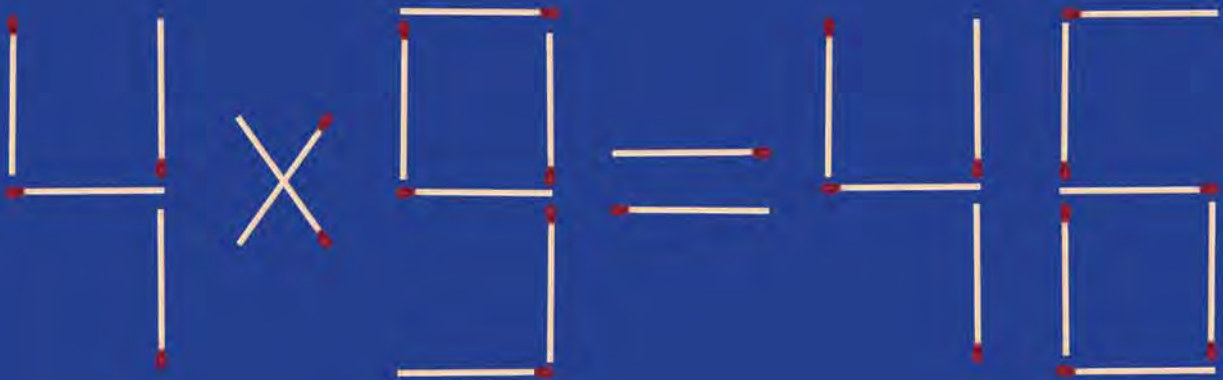
उन्होंने इंस्पेक्टर चीता सिंह को धन्यवाद दिया, जिन की समय पर की गई कार्यवाही से वे बच गए थे और पुलिस बैडी को ले कर चली गई.

आज पहली बार चार्ली को अपनी बातें करने की आदत के लिए बुरा लग रहा था. उस की बिना सोचेसमझे बोलने की आदत से आज बड़ा नुकसान हो सकता था. उस की आंखों में आंसू थे. उस ने उसी समय खुद से और मम्मीपापा से वादा किया कि वह भविष्य में बिना मतलब की बातें नहीं करेगा और हमेशा सोचसमझ कर ही जरूरत की बातें करेगा.

स्टिक्स मिलाएं

प्रश्न को पढ़ें और उत्तर देने के लिए माचिस की तिल्लियों को ध्यान से देखें.

माचिस की 2 तिल्ली बढ़ा कर आप क्या समीकरण हल कर सकते हैं?



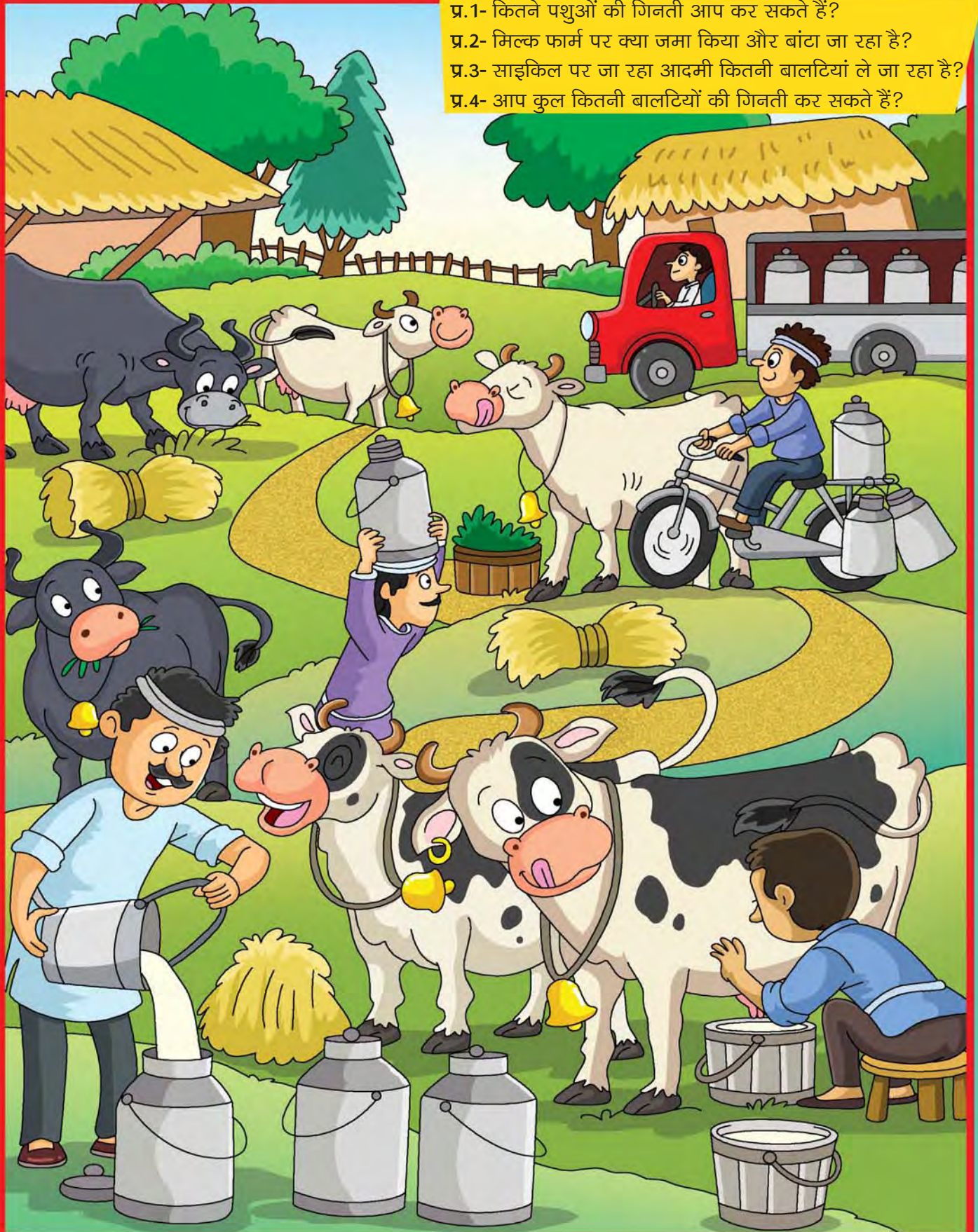
नीचे बिल्कुल एक जैसे 5 वर्ग हैं. सिर्फ 3 माचिस की तिल्लियों को बढ़ा कर क्या आप एक जैसे 4 वर्ग बना सकते हैं?



याददाश्त बढ़ाएं

विश्व दुग्ध दिवस 1 जून को मनाया जाता है।
चित्र को देखें और प्रश्नों का उत्तर दें।

- प्र.1- कितने पशुओं की गिनती आप कर सकते हैं?
प्र.2- मिल्क फार्म पर क्या जमा किया और बांटा जा रहा है?
प्र.3- साइकिल पर जा रहा आदमी कितनी बालटियां ले जा रहा है?
प्र.4- आप कुल कितनी बालटियों की गिनती कर सकते हैं?



बर्थडे पार्टी

रोहन का जन्मदिन 2 दिन बाद आने वाला है. जन्मदिन की पार्टी को आयोजित करने के लिए इस शब्द सूची में से जन्मदिन की चीजों को ढूँढ़ने और वस्तुओं की सूची बनाने में उस की मदद कीजिए.

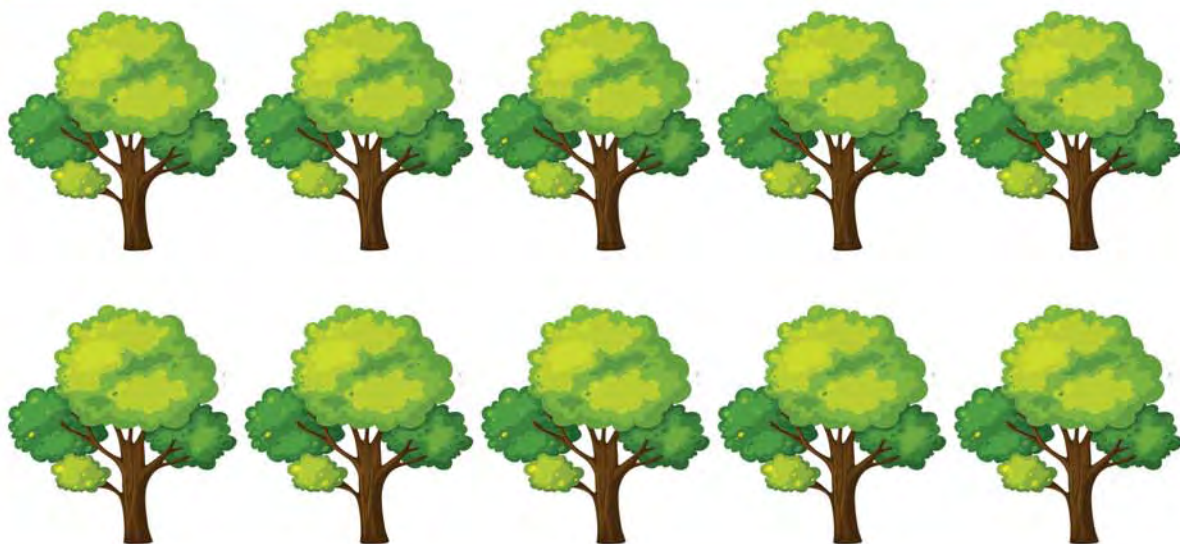
सं	खं	सु	स	र	प्रा	इ	ज	चं	जे	अं	के	क	ध	क
म	गी	घा	ई	ला	द	मुं	ब	ई	दे	औ	ब	ई	दे	पी
इ	ति	त	ल	मूं	ई	ना	ली	ल	ब	क्	ग	ना	ग	टो
स	बौ	क	न	बी	जिं	गा	चौ	फि	गु	टो	ग	त	ग	घ
जा	इ	मा	पां	डे	य	ची	गे	न	ला	है	र्	पी	प	ड
व	जे	रु	फि	श	लं	ल	आ	शै	ड	रा	ला	ज	प	च
ट	नौ	को	ग	ना	ग	ल	टि	न	च	ची	ला	ज	प	दो
धी	ड	ई	ज	प	ड	भौ	दा	झें	ल	चं	ग	झा	उ	रु
घ	का	अ	इ	कै	गु	अ	उ	प	हा	र	ग	ग	उ	त
मं	गु	आं	ग	झा	उ	ग	टि	टि	ह	री	ग	ध	उ	व
ड.	कु	ज	री	के	न	द	ल	कं	कं	झ	ग	ट	न	श
च	डी	ज	ल	दि	ष	फ	खे	कं	कं	झ	ख	फ	ऊ	ष
ल	कैं	को	म	च	ग	सी	टि	न	च	ची	ला	ज	प	न
गं	खं	न्	ख	ष	अं	पौ	अ	चं	जे	अं	अ	द	ध	लू
रु	ज	क	न	बी	जिं	ग	चौ	फि	गु	टो	ग	त	ग	बै

HAPPY
BIRTHDAY



सोचें और लिखें

स्वाति को 10 पेड़ लगाने हैं. उसे 5 पंक्तियों में ही इन पेड़ों को लगाना है और हर पंक्ति में 4 पेड़ होने चाहिए. वह ऐसा किस तरह कर सकती है बताएं?



2 दोस्त राहुल और मनीष ग़ौसरी की दुकान यानी पंसारी के यहां सामान खरीदने गए. जब वे सामान खरीद कर लौट रहे थे तो राहुल ने मनीष से कहा.

अगर तुम मुझे अपना एक बैग दे दोगे
तो मेरे पास तुम से दोगुने बैग हो
जाएंगे. अगर मैं ने तुम्हें एक बैग दे
दिया तो हम दोनों के पास बैगों की
संख्या एक समान हो जाएगी.

बताएं कि दोनों कितने
बैग्स ढो रहे थे?

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.



हमारे और उन के घर

मनुष्य घर बनाते हैं और उन में कई कमरे बनाते हैं जैसे किचन, बेडरूम, टॉयलेट, बाथरूम आदि. नैकेड मोल रैट्स यानी नंगे तिल चूहे भी ऐसे ही अपने घरों को विभिन्न कमरों में बांट देते हैं.

नैकेड मोल रैट्स स्तनधारी हैं और ये पूर्वी अफ्रीका में पाए जाते हैं. ठीक वैसे ही जैसे हम अपने घर बनाते हैं, वे भी बिल या सुरंग योजनानुसार तरीके से खोदते हैं जहां वे खोदने के लिए एक लाइन बनाते हैं. जानवर, जो लाइन के सामने होते हैं, खोदना शुरू करते हैं, और जो इस के पीछे होते हैं, वे धूल यानी मिट्टी को पीछे की ओर बुहारते जाते हैं जब तक कि लाइन का अंतिम जानवर धूल को बुहार कर बाहर नहीं कर देता है.

ये भूमिगत सुरंग अलगअलग कामों जैसे

पालनपोषण खानेपीने और खेतीबाड़ी के लिए बंटे होते हैं. नैकेड मोल रैट्स के मलमूत्र त्याग के लिए एक अलग से बिल होता है. जब टॉयलेट बिल भर जाता है तो वे इसे ताजा मिट्टी से भर देते हैं या बंद कर देते हैं और एक नया बिल खोद लेते हैं. इसी कारण उन्हें सब से हाइजीनिक यानी कीटाणु मुक्त चूहा कहा जाता है.

एक कालोनी जो छह फुटबॉल मैदानों के एक दायरे में फैला होता है, में 300 के करीब मोल रैट्स पाए जाते हैं.

नैकेड मोल रैट्स पीछे की ओर उतनी ही तेजी से भागते हैं जितना कि आगे की ओर ये भाग सकते हैं.



दादाजी और विश्व साइकिल दिवस

कहानी • विवेक चक्रवर्ती

रिया, राहुल और दादाजी पार्क में बेंच पर बैठे थे.

दादाजी, उन के टीशर्ट पर 'पर्यावरण का रक्षक' क्यों लिखा हुआ है?

ऐसा इसलिए है वे एक तरीके से पर्यावरण की रक्षा कर रहे हैं.

लेकिन दादाजी, पर्यावरण की रक्षा करने के लिए तो पेड़ लगाए जाते हैं.

रिया, पर्यावरण की रक्षा करने के लिए हमें सिर्फ पेड़ ही नहीं लगाने पड़ते हैं बल्कि हम और भी बहुत से काम कर सकते हैं. ये लोग ऐसा ही कुछ कर रहे हैं.

साइकिल चला कर दादाजी?

हां, साइकिल चला कर. साइकिल परिवहन का एक टिकाऊ साधन है जो किसी भी तरह के ईंधन का इस्तेमाल नहीं करता और न ही प्रदूषण फैलाता है. यही कारण है कि ये लोग खुद को पर्यावरण का रक्षक कहलवा रहे हैं.

वाउ, हम भी साइकिल की सवारी करेंगे और क्या हम भी पर्यावरण का रक्षक कहलाएंगे?

हां, इन दिनों विश्व के सभी देश साइकिल चलाने को बढ़ावा दे रहे हैं ताकि प्रदूषण को कम किया जा सके. साइकिल के महत्त्व और लोकप्रियता को बढ़ाने के नजरिए से 3 जून को विश्व साइकिल दिवस मनाया जाता है. इस से लोगों में साइकिल से यात्रा करने का उत्साह जगेगा और वे अन्य वाहनों के इस्तेमाल से बचेंगे.



साइकिल चलाना न सिर्फ पर्यावरण के लिए लाभकारी है बल्कि इस से हमारा स्वास्थ्य भी ठीक रहता है.

अब हम भी आसपास की जगहों पर साइकिल से जाया करेंगे और अन्य लोगों को प्रेरित करेंगे कि वे भी ऐसा ही करेंगे ताकि पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त हो सके और ज्यादा से ज्यादा लोग पर्यावरण के रक्षक बन सकें.



दादाजी ने मुसकराते हुए अपना सिर हिला दिया.

नन्ही कलम से



भारवि नायक कलिता, 13 वर्ष
नई दिल्ली

वसंत की प्रेरणा

क्षितिज को छूना, अमेजन नदी का कटना, पानी की धाराओं का इकट्ठा होना, बिना ईंट और गारे के लाइब्रेरी बनाना, एक लूज शीट पर अपने भविष्य को बनाना, यह निश्चित करना कि यह साफसुथरा हो, सूर्यास्त के समय रंगों के मिश्रण को देखना, जब बारिश हो रही हो तो भीग जाना, झाड़ियों और फूलों के नाम जानना, चांद की अलगअलग अवस्थाओं को आकाश में देखना, स्वयं को संदेश देने के लिए किताबें पढ़ना, हिमयुग के समय से जो पक्षी हैं, उन्हें देखना, इंद्रधनुष को छूने की चाहत रखना, चांद के वक्र पर बैठने की इच्छा का होना, ये ही हैं वसंत की प्रेरणा. सच्चाई की नकल नहीं की जा सकती है.

अनुषा शुक्ला, 10 वर्ष
जबलपुर



थीर्थ सुदीप, 7 वर्ष
बैंगलुरु

वर्षा

आसमान में जो बादल होते हैं, उन्हीं से वर्षा होती है. ये बहुत ऊपर होते हैं. जब धरती पर वर्षा होती है, तो किसान फसल उगा पाते हैं. जब मैं कीचड़ में कूदता हूं, तो मुझे लगता है कि वर्षा का होना एक बहुत ही खूबसूरत नजारा है. यह सभी पेड़ों को चमकदार बना देती है. मौनसून मेरे पसंदीदा मौसमों में से एक है, क्योंकि इस के बहुत से प्यारेप्यारे कारण हैं.

विवान काक, 7 वर्ष
बैंगलुरु



वैष्णवि त्यागी, 10 वर्ष
नोएडा

प्रकृति मां

वह हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और हमारी सहायक हैं। वह कभी असफल नहीं हो सकती। वह एक ही प्रकार की हैं। उसे कोई भी बदल नहीं सकता है। प्यारी प्रकृति मां, सभी जानवरों और पक्षियों को आप घर देती हैं। हम उन से कह सकते हैं कि आप अपना काम करना मत भूल जाना। वह हमारा समर्थन करती हैं। प्यारी प्रकृति मां, आप सारी कीमती मूल्यवान चीजें हमें देती हैं। जैसे कि जंगल और नदियां। लेकिन अब प्रकृति मां का विनाश किया जा रहा है। हम मनुष्य ही इस विनाश का कारण हैं। इसलिए आओ, हम उन्हें बचाने के लिए अपने हाथ मिला लें। यह मेरी चाहत है। हम में से कुछ इस के लिए कोशिश कर रहे हैं, पूरी शक्ति के साथ आप को बचाएंगे। हमें सिर्फ एक छोटी सी मदद की जरूरत है ताकि प्रकाश फैलाया जा सके। प्यारी प्रकृति मां, आप बेफिक्र रहें।

आर्या डोडानी और अन्या गोयल, 10 वर्ष
पुणे



आन्या मेहता, 7 वर्ष
पुणे

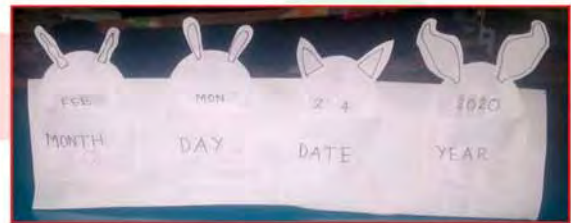


इफत जेहरा, 10 वर्ष
झांसी

बुरे विचार

बुरी बातें हर जगह फैल रही हैं, इसे रोकने के लिए आप क्या कर सकते हो। अच्छी बातें करो और अच्छा बोला करो। गुस्सा और दुखी मत हो। तुरंत ही ये सारी बातें समाप्त हो जाएंगी। अच्छाइयां जरूर आएंगी ताकि शैतान को रोका जा सके और गलत काम बंद हो सके। जो जरूरतमंद हैं, उन की सहायता किया करें। इसलिए अगर आप चाहते हैं कि बुरी चीजों के प्रभाव में आप न आए तो बहादुर बनें और अपने अधिकारों के लिए सजग खड़ा होना सीखें। पूरी शक्ति के साथ हर चुनौती का सामना करें।

आर. सहाना, 10 वर्ष, चैन्नई



यह एक कैलेंडर है। इसे हमारे 11 वर्षीय पाठक शिवम प्रांजल ने बिहार से भेजा है।

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:



चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031



writetochampak@delhipress.in



9619587613



www.facebook.com/ChampakMagazine



http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें।

गुप्त संदेश

कहानी • वंदना गुप्ता

परागवन के राजा सिंहराज शेर बहुत शांतिप्रिय राजा थे. अपने आसपास के सभी वनों से उन के संबंध बहुत अच्छे थे. पर नंदनवन का राजा क्रूरसिंह परागवन के साथ अच्छे संबंध नहीं बनाना चाहता था. उस की सेना कभी परागवन की हथियारों से भरी गाड़ी और कभी सैनिकों की गाड़ी पर हमला करती.

एक दिन सिंहराज ने अपने वन के रक्षामंत्री हार्डी भेड़िए के साथ मीटिंग रखी और कहा,

“हमारी समझ में यह नहीं आता कि कब कौन सी गाड़ी कहां जा रही है इस बात का उन्हें कैसा पता चलता है.

“हमारे वन के अंदर की बातें क्रूरसिंह को पता कैसे चल जाती हैं. हमें लगता है कि हमारे वन का कोई अधिकारी उस से मिला हुआ है.”

“आप चिंता न करें महाराज, मैं पता



लगाऊंगा कि हमारे वन की खबरें क्रूरसिंह तक कैसे पहुंचती हैं,” हार्डी ने सिंहराज को विश्वास दिलाया।

रोबी परागवन का जागरूक खरगोश था। वह हमेशा समाचार सुनता था और अपने वन के हित में काम भी करता था। वह फोटोग्राफर था और उस ने जानवरों और पक्षियों के बहुत सुंदर फोटो खींचे थे।

एक दिन एक सुंदर मोर का पीछा करतेकरते वह परागवन व नंदनवन की सीमा के पास तक चला गया। वह अपने मोबाइल से उस का फोटो खींच रहा था तभी उस ने नंदनवन के रक्षामंत्री दारा दरियाई घोड़े को हार्डी के साथ देखा। उसे हैरानी हुई कि वे दोनों आखिर क्या बातें कर रहे हैं?

वह झाड़ियों में छिपताछिपाता उन के पास तक जा पहुंचा और उन दोनों की वीडियो बनाने लगा। दादा ने हार्डी को रुपए दिए और कहा कि वह आगे भी इसी तरह परागवन की खबरें उस तक पहुंचाता रहे।

यह देख कर रोबी हैरान रह गया। वह जानता था कि सिंहराज हार्डी पर बहुत विश्वास करते हैं, इसलिए वे उस के खिलाफ कुछ नहीं सुनेंगे। लेकिन अब उस के पास हार्डी के गद्दार होने का पक्का सबूत था। वह उसे दिखाने के लिए तेजी से नंदनवन के रक्षामंत्री के पास गया।

रोबी भागतेभागते एक पत्थर से टकरा कर गिर गया और उस के पिछले पैर में चोट लग गई। चोट लगने के बाद भी रोबी उठ कर तेजी भाग लिया। उस ने जल्दी से अपने मोबाइल का एसडी कार्ड निकाला, लेकिन उसे कहां रखा यह उसे पता नहीं चला। उसे याद आया कि वह अपने साथ एक छोटी सी डब्बी में खाने के लिए बिस्कुट लाया था, उस ने उसे खाली किया और एसडी कार्ड उस में डाल दिया। उस समय



वह परागवन की झील के पास था। वहां बहुत से पेड़ थे। उस ने एक पेड़ के नीचे जड़ के पास मिट्टी खोदी और उस डब्बी को मिट्टी में दबा दिया। उस ने फिर भागना शुरू कर दिया। पैर में दर्द के कारण उस की चाल धीमी हो गई थी। वह बीच में रुका भी था। अतः हार्डी ने उसे जल्दी ही पकड़ लिया।

“कौन हो तुम? सीमा पर क्या कर रहे थे?” हार्डी ने कड़क आवाज में पूछा।

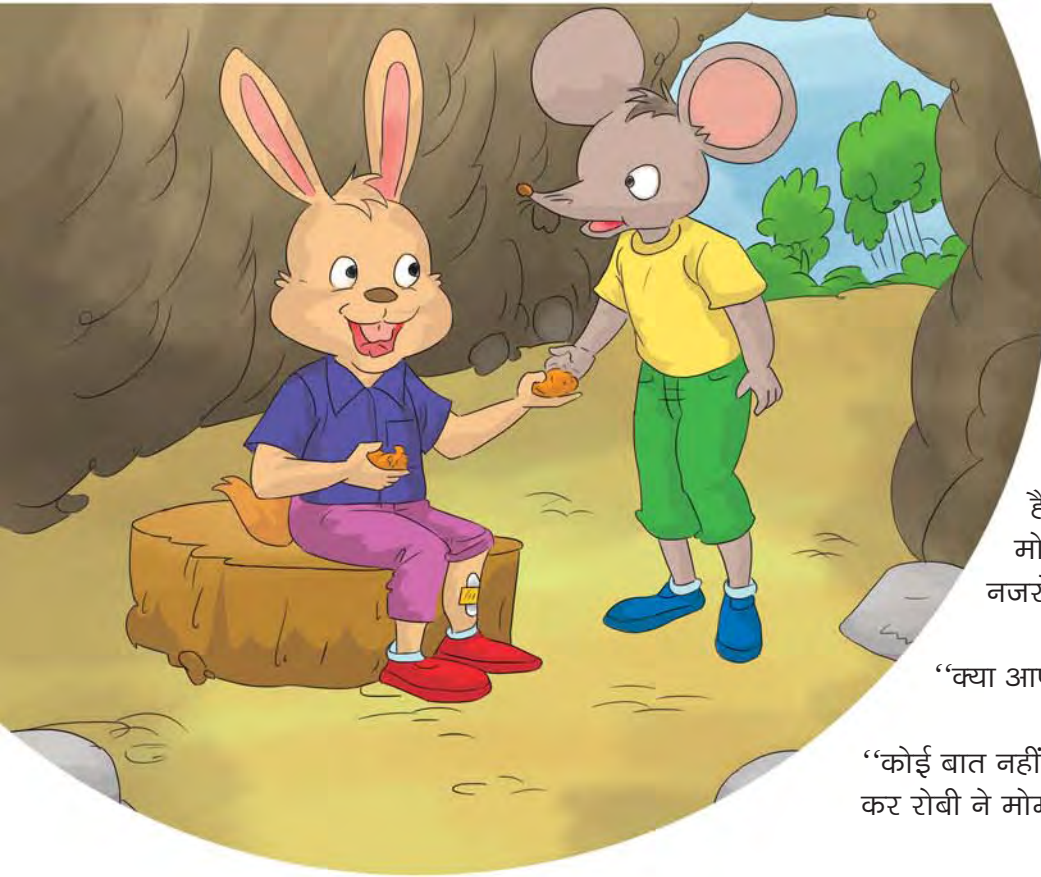
“जी, वह मोर की फोटो ले रहा था,” रोबी ने बताया।

हार्डी ने रोबी का मोबाइल छीन लिया और देख कर बोला, “इस में तो मोर का कोई फोटो ही नहीं है।”

“वह मेरे फोटो खींचने से पहले ही उड़ गया,” रोबी बोली।

“तुम्हारे मोबाइल का एसडी कार्ड कहां है?” हार्डी ने पूछा।

“उसे मैं ने निकाला था वापस डालना भूल गया,” रोबी ने बात बनाई।



“तुम कौन हो, यहां कैसे आए?”
रोबी ने पूछा.

“मेरा नाम मोमो है मैं यहीं बिल
बना कर रहता हूं.”

“हां, खुशबू तो बहुत अच्छी आ रही
है पर तुम्हें भी तो भूख लगी होगी,”
मोमो ने बिस्कुट की तरफ ललचाई
नजरों से देखते हुए कहा.

“क्या आप के पास बिस्कुट होंगे,” रोबी बोला.

“कोई बात नहीं हम दोनों वांट कर खाएंगे,” कह
कर रोबी ने मोमो को बिस्कुट दिए.

“तुम इस गुफा से बाहर जा सकते हो?” रोबी ने
बिस्कुट खाते हुए पूछा.

“हां, क्यों नहीं, रोज बाहर जाता हूं,” मोमो ने
बताया.

“पर अब गुफा का मुंह बंद है.”

“कोई बात नहीं, मेरे निकलने लायक बहुत सी
दरारें हैं पर तुम नहीं निकल पाओगे.”

“तुम मेरे दोस्त तक मेरा संदेश पहुंचा दोगे? यदि
जरूरी नहीं होता तो तुम्हें तकलीफ न देता.”

“जरूर पहुंचा दूंगा, बताओ, किस से क्या कहना
है,” मोमो ने पूछा.

रोबी ने कुछ देर सोचा, फिर गुफा में चारों ओर
नजरें दौड़ाई तभी उसे एक लकड़ी का टुकड़ा दिखाई
दिया. उस ने उसे उठा लिया, फिर उस ने एक
नुकीला पत्थर ढूंढा और उस से लकड़ी के टुकड़े पर
3 सूरज, झील, पेड़ बना दिए.

फिर उस ने मोमो को अपने एक दोस्त रिकी रैकून

“तुम झूठ बोल रहे हो, जरूर हम से कुछ छिपा
रहे हो. अब भेड़िए को देख कर खरगोश तो अपनी
जान बचाने को भागेगा ही, मैं आप को देख कर डर
गया था.”

“मन तो कर रहा है तुम्हें खा ही लूं पर मुझे लग
रहा है कि तुम कुछ छिपा रहे हो और जब तक मैं
यह जान नहीं लेता, तुम्हें जीवित रखना होगा,” कह
कर हार्डी ने रोबी को एक गुफा में बंद कर दिया.

“मैं फिर आऊंगा, यदि जान प्यारी हो तो बता
देना कि क्या छिपा रहे हो,” कह कर हार्डी ने
गुफा के मुंह पर एक बड़ा सा पत्थर लगाया और
चला गया.

रोबी के पैर में दर्द हो रहा था और उसे भूख भी लगी
थी. तभी उसे याद आया कि डब्बी खाली करते समय
उस ने बिस्कुट अपनी जेब में डाल लिए थे. उस ने
सोचा, ‘बिस्कुट खा कर थोड़ा आराम कर लूं फिर
यहां से भागने का कोई उपाय सोचूंगा.’

रोबी बिस्कुट निकाल कर खाने लगा पर तभी उस
की गंध पा कर एक चूहा वहां आया.

का पता बता कर कहा, “ये लकड़ी का टुकड़ा रिकी को दे कर तुरंत चले आना. उसे और कुछ मत बताना.”

मोमो तुरंत लकड़ी ले कर रिकी के घर जा पहुंचा और उसे लकड़ी दे कर बोला, “ये तुम्हारे दोस्त रोबी ने भेजा है.”

कुछ देर रिकी हैरान हो कर लकड़ी को देखता रहा.

“3 सूरज, झील, पेड़, ये क्या हैं और रोबी खुद कहां है?” रिकी ने पूछा.

पर जवाब देने को मोमो वहां नहीं था वह तो लकड़ी देते ही वहां से भाग गया था.

रिकी ने तुरंत रोबी को फोन लगाया पर उस का फोन बंद था. वह सोच में पड़ गया. वह रोबी को अच्छी तरह जानता था. यदि उस ने कोई संदेश भेजा है तो जरूर इस का कुछ खास मतलब होगा, वह खुद भी खतरे में हो सकता है. वह बारबार संदेश पढ़ने लगा.

रोबी ने 3 सूरज क्यों लिखा? सूरज तो एक ही होता है. जब उस की कुछ भी समझ में नहीं आया तो वह झील के किनारे पहुंचा. वहां भी उसे कोई खास बात नजर नहीं आई. उस ने इधरउधर से तीसरा पेड़ देखा पर कुछ न मिला. उस ने अच्छी तरह देखा, कहीं एक तरह के 3 पेड़ भी नहीं दिखाई दिए. उस ने दूरदूर जा कर देखा, कहीं 3 पेड़ किसी खास आकार में लगे हों पर ऐसा भी कुछ वहां नहीं था. अब दिन भी छिपने लगा था. अतः निराश हो कर वह वापस लौट आया.

उस रात रिकी सो नहीं पाया,

“मुझे इस संदेश को हर हाल में डिकोड करना होगा. पता नहीं रोबी कहां व किस हाल में है,” बस, वह यही सोचे जा रहा था पर बारबार पढ़ने व ध्यान से देखने के बाद भी वह कुछ समझ नहीं पा रहा था.

काफी देर बाद उस की आंख लगी इसलिए वह सुबह देर तक सोता रहा. उस के पड़ोसी विली नेवले ने उसे जगाया.

“क्या बात है रिकी, सुबह के 9 बज चुके हैं. सूरज सिर पर चमक रहा है आज उठने का इरादा नहीं है? तबीयत तो ठीक है?”

नींद खुलते ही रिकी के दिमाग में फिर रोबी का भेजा संदेश घूमने लगा. अचानक विली के मन में विचार आया कि कहीं रोबी का मतलब दिन के 3 बजे से तो नहीं है? उसे आशा की हलकी सी किरण दिखाई दी और उस ने तय किया कि दोपहर 3 बजे वह झील पर जा कर देखेगा.



3 बजने से पहले ही रिकी झील के किनारे जा पहुंचा.

‘यदि 3 सूरज का मतलब दोपहर के 3 बजे से है तो झील व पेड़ का क्या मतलब है? वह सोच रहा था.’

वह कभी झील के पानी को देखता तो कभी आसपास के पेड़ों को.

जैसे ही 3 बजे सूरज उस दिशा में आया जब केवल एक ही पेड़ की परछाई झील के पानी में पड़ रही थी. रिकी के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई, ‘जरूर इसी पेड़ में कोई राज छिपा है जिस का इशारा रोबी ने अपने संदेश में किया है. पेड़ पर तो रोबी नहीं चढ़ता,’ सोचते हुए वह नीचे ही पेड़ के चारों ओर घूमने लगा और जवाब तलाशने लगा.

उसे एक स्थान पर मिट्टी हटी हुई सी लगी, उस ने वहां खोदा तो उसे रोबी की छिपाई हुई डब्बी मिल गई. रिकी ने उसे खोल कर देखा तो उसे अंदर एसडी कार्ड नजर आया. वह उसे ले कर तुरंत घर आ गया और अपने लेपटोप में डाल कर रोबी की बनाई वीडियो देखी.

तो ये चक्कर है, उस की आंखें आश्चर्य से फटी रह गईं. हमारे वन का रक्षामंत्री ही दुश्मनों से मिला है. मुझे ये वीडियो तुरंत अपने राजा सिंहराज को दिखानी होगी.

बिना समय गंवाए रिकी राजमहल गया और अकेले में राजा से मिलने की इच्छा जाहिर की.



“अभी महाराज व्यस्त हैं, तुम कल आना,” एक सिपाही ने कहा.

“मेरा उन से अभी मिलना बहुत जरूरी है. हमारे वन की सुरक्षा खतरे में है,” रिकी ने कहा.

इतना सुनते ही सिंहराज ने उसे तुरंत बुला लिया. रिकी ने उन्हें वीडियो दिखाई जिसे देख कर महाराज हैरान रह गए, “जिस पर हम ने सब से अधिक भरोसा किया वही गद्दार निकला,” उन्होंने कहा.

“ये वीडियो तुम ने बनाई है?” उन्होंने पूछा.

“नहीं महाराज, मेरे दोस्त रोबी ने मोमो के हाथ ये गुप्त संदेश भेजा. मैं इसे झील के पास से निकाल कर लाया हूं, मुझे लगता है रोबी की जान को भी खतरा है. पता नहीं, हार्डी ने उसे किस हाल में रखा है जो उसे इस गुप्त संदेश भेजना पड़ा,” रिकी ने पूरी बात बताते हुए कहा.

सिंहराज को हार्डी पर बहुत गुस्सा आया. उन्होंने उस की जेलर जोजो हाथी से पिटाई करवाई तो उस ने रोबी की गुफा का पता बता दिया.

रोबी को तुरंत गुफा से बाहर निकाला गया और राजमहल लाया गया. रिकी ने उस से पूछा, “तुम्हें गुप्त संदेश भेजने की क्या जरूरत थी, मोमो के साथ अपनी गुफा का पता भिजवा देते तो हम तुम्हें कल ही बाहर निकाल लाते और हार्डी के बारे में भी तुम ही महाराज को बता देते, एसडी कार्ड भी तुम्हीं निकाल लाते.”

“महाराज हार्डी पर बहुत भरोसा करते थे, वीडियो देखे बिना वे हमारी बात पर विश्वास नहीं करते. इसलिए पहले वीडियो दिखाना बहुत जरूरी था. मैं मोमो को ठीक से नहीं जानता था हो सकता था हार्डी ने ही उसे मुझ पर नजर रखने के लिए भेजा हो,” रोबी ने बताया.

“मैं तुम्हारी जान खतरे में नहीं डालना चाहता था



और मुझे भी डर था कि संदेश किसी और के हाथ न लग जाए इसलिए मुझे यह सावधानी बरतनी पड़ी,” रोबी ने बताया.

“और अगर मैं तुम्हारा गुप्त संदेश समझ ही न पाता तो?” रिकी ने पूछा.

“मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं, तुम्हारी बुद्धिमानी पर मुझे पूरा भरोसा है,” रोबी ने कहा.

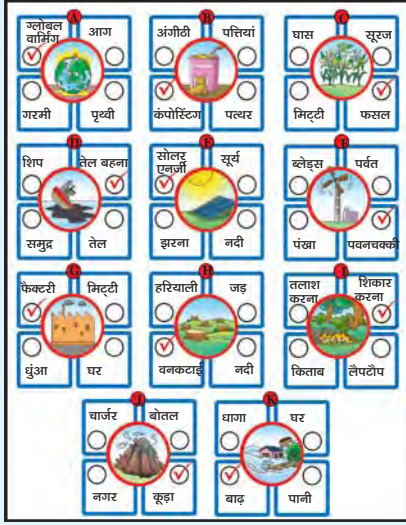
महाराज काफी देर से उन दोनों की बातें सुन रहे थे. “जितनी सूझबूझ व चतुराई से तुम ने संदेश भेजा और जिस तरह रिकी ने उस का मतलब समझा मैं तुम दोनों की चतुराई व अपने वन के लिए प्यार देख कर बहुत खुश हुआ हूं. मैं ने फैसला किया है कि अब से रोबी परागवन का रक्षामंत्री और रिकी हमारा सलाहकार बनेगा,” सिंहराज ने कहा.

“पर सब से पहले रोबी के पैर का इलाज करवाया जाए,” उन्होंने आदेश दिया.

रोबो और रिकी बहुत खुश थे, क्योंकि अब उन के वन की सुरक्षा को कोई खतरा नहीं था. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 9 : विश्व पर्यावरण दिवस :



पृष्ठ 11 : मैथ फन :

गुड़ के बैग्स

12 दिन में 25 घोड़े 5 बैग गुड़ खाते हैं

1 दिन में 1 घोड़े 5/12 बैग खाते हैं.

1 दिन में 1 घोड़ा 5/12x25 बैग्स खाता है.

1 दिन में 10 घोड़े 5x10/12x25 बैग्स खाते हैं.

इसलिए 18 दिन में 10 घोड़े 5x10x18/12x25 बैग्स = 3 बैग्स खाएंगे.

27 छात्र

स्पष्टीकरण : छात्रों की कुल संख्या :-16+12-1= 27

पृष्ठ 15 : बीच पर एक दिन :

टै	वे	ल	चौ	गा	गौ	बे	ल	चा	रे	प	प	ड़ा
टी	ल	बा	वि	ना	प	घौ	मौ	गौ	त	प	क	अ
चौ	ची	मूं	ग	फ	ली	ई	कं	नू	म	के	बौ	धू
न	ची	ट	सू	म	व	रि	कं	प	ह	इ	ले	प
ई	ची	ट	गे	ची	नू	फ	प	कू	ल	ट	फौ	छां
गा	पू	आ	अ	स	नो	प	कि	नौ	श	कं	ना	ह
फ	पा	मं	ल	मु	प	ज	ड	फि	री	क	ई	जं
इ	बौ	ई	घ	द्र	घ	ए	ली	चौ	गो	के	बो	खा
ला	पु	ब	प	मं	मां	जे	पि	फो	ग	द	फ	री
क	नि	क	पि	मं	पि	ल	प	प	लौ	प	स	कं
अ	द	ल	व	ज	ण	नि	र	ट	पि	टा	कं	झ
प	मं	ज	ण	नि	कं	ट	पि	ह	कं	झ	र	प
ड.	मं	धू	प	च	श	मा	पि	कं	ल	झ	प	ख

पृष्ठ 31 : सुलझाएं :

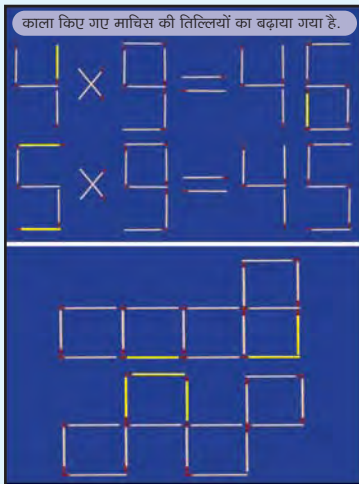
बेमेल को बाहर करें

1. शर्ट, चम्मच, चांद, जून
2. कूदना, शंख, कूबड़, कड़ा
3. जेल, पत्र, पूंछ, केकड़ा
4. ऊपर, टाई, बोटल, खरीदना
5. रोल, घुटना, वोट डालना, टोल

निम्न शब्दों को सुलझाएं

- A - कोरोना वायरस
- B - ऐडवेंचर
- C - मौनसून वर्षा
- D - डायनासौर
- E - स्विमिंग पूल.

पृष्ठ 35 : स्टिक्स मिलाएं :



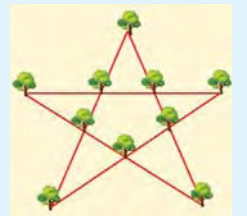
पृष्ठ 37 : बर्ध डे पार्टी :

सं	खं	सु	सर	प्रा	इ	ज	चं	जे	अं	के	क	ध	क
म	गी	घा	ई	ला	द	मुं	ब	ई	दे	औ	ब	ई	दे
इ	ति	त	ल	मुं	ई	ना	ली	ल	ब	व	ग	ना	ग
स	बौ	क	न	बी	जिं	गा	चौ	फि	गु	टो	ग	त	ग
ज	इ	मा	पां	डे	य	ची	गे	न	ला	है	र	पी	प
व	जे	र	फि	श	लं	ल	आ	शै	ड	रा	ला	ज	प
ट	नौ	को	ग	ना	ग	ल	टि	न	च	ची	ला	ज	प
धी	ड	ई	ज	प	ड	भौ	दा	झैं	ल	चं	ग	झा	उ
घ	का	अ	इ	कै	गु	अ	उ	प	हा	र	ग	ग	उ
मं	गु	आं	ग	झा	उ	ग	टि	टि	ह	री	ग	ध	उ
ड.	कु	ज	री	के	न	द	ल	कं	कं	झ	ग	ट	न
च	डी	ज	ल	दि	ष	फ	खे	कं	कं	झ	ख	फ	ऊ
ल	कै	को	म	च	ग	सी	टि	न	च	ची	ला	ज	प
गं	खं	न	ख	ष	अं	पौ	अ	चं	जे	अं	अ	द	ध
र	ज	क	न	बी	जिं	ग	चौ	फि	गु	टो	ग	त	ग

पृष्ठ 38 :

सोचें और लिखें :

उसे तारे के आकार में पेड़ लगाने की आवश्यकता है.

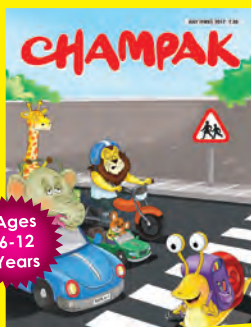


राहुल 7 बैग्स ढो रहा है जबकि मनीष 5 बैग्स ढो रहा है.

अंपक



If you are looking for magazines that will help spark the imagination of your child, look no further! Dedicated to broadening the horizons of children aged 2-12 years, *Champak*, *Highlights Genies* and *Highlights Champs* are an essential part of your child's reading list.



India's largest read
children's magazine



America's leading children's
magazine in now is India!



America's leading early
childhood magazine
is now in India!

To subscribe : SMS 8588843436 | Call toll free no.1800 103 8880 |
visit www.delhipress.in/subscribe | email subscription@delhipress.in

PARLE®

Snack
& Win**

ग्रेंड प्राइज़

ROYAL
ENFIELD

INTERCEPTOR 650



100
से ज़्यादा
शानदार इनाम
रोज़ाना



स्मार्ट
फ़ोन

मूवी
वाउचर्स



थोड़ा चटपटा
थोड़ा नमकीन
पारले
चटकीन्स



ऑफर तमिलनाडु को छोड़कर पूरे भारत में मान्य है। पैक्स इस ऑफर के बिना भी उपलब्ध हैं। चित्र केवल प्रतिनिधित्व के लिए हैं। **नियम और शर्तें लागू

